प्रथम अध्याय

प्रभा खेतान का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1. व्यक्तित्व

1.1.1 जन्म

1.1.2.माता

1.1.3. पिता

1.1.4. दाई माँ

1.1.5. भाई-बहन और अन्य रिश्तेदार

1.1.6. बचपन के दोस्त

1.1.7. शारीरिक वर्णन एवं वेशभूषा

1.1.8. पसंद

1.1.9. पारिवारिक स्थिति

1.1.10 शिक्षा एवं दीक्षा

1.1.11. विवाह और अनोखा रिश्ता

1.1.12. प्रेरणा एवं प्रोत्साहन

1.1.13 साहित्य सृजन

1.1.14 व्यवसायिक अभिरूचि

1.1.15 नारीवादी चिंतक

1.1.16 महान हस्तियों का प्रभाव

1.1.17 अनुसंधाता और अनुवादक

1.1.18 सफलताओं के शिखर पर

1.1.19. समाज सेवी

1.1.20 स्त्री के प्रति दृष्टिकोण

1.2. कृतित्व

काव्यसंग्रह

उपन्यास

आत्मकथा

अनुवाद

संपादित

चिंतन-परक

1.2.1. काव्य संग्रह

1.2.1.1. अपरिचित उजाले

1.2.1.2 सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं

1.2.1.3. एक और आकाश की खोज में

1.2.1.4. कृष्णधर्मा मैं

1.2.1.5 हुस्नाबानों और अन्य कविताएँ

1.2.1.6. अहल्या

1.2.2. उपन्यास

1.2.2.1. आओ पेपे, घर चलें

1.2.2.2. तालाबंदी

1.2.2.3. अग्निसंभवा

1.2.2.4. एड्स

1.2.2.5. छिन्नमस्ता

1.2.2.6. अपने-अपने चेहरे

1.2.2.7. पीली आंधी

1.2.2.8. स्त्री-पक्ष

1.2.3. आत्मकथा

1.2.4. संपादन

1.2.5 अनुवाद

1.2.5.1. साँकलो में कैद क्षितिज

1.2.5.2. स्त्री उपेक्षिता

1.2.6. चिंतनपरक साहित्य

1.2.6.1.सार्त्र का अस्तित्ववाद

1.2.6.2. सार्त्र शब्दों का मसीहा

1.2.6.3. अल्बेयर कामू : वह पहला आदमी

1.2.6.4. उपनिवेश में स्त्री

1.2.6.5. बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ

1.2.7. पत्र-पत्रिकाएँ

1.2.8. प्रकाशनाधीन साहित्य

1.3. सम्मान एवं पुरस्कार

1.4. मृत्यु

निष्कर्ष

प्रथम अध्याय

प्रभा खेतान का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रस्तावना-

भारतीय साहित्य की विलक्षण बुद्धिजीवी डॉ. प्रभा खेतान दर्शन, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, विश्व बाजार और उद्योग जगत में ख्याति प्राप्त है ही पर इनसे बढ़कर है सक्रिय स्त्रीवादी लेखिका। उन्होंने विश्व के लगभग सारे स्त्रीवादी लेखन को निचोड़कर अपने समाज में उपनिवेशित स्त्री के शोषण, मनोविज्ञान, मुक्ति के संघर्ष को लेकर विचारोत्तेजक लेखन किया है। इस समर्थ लेखिका का कृतित्व ही उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालता है।

व्यक्तित्व वह साँचा है जिसमें रचनाकार का संपूर्ण जीवन ढलता और पुष्ट होता है। वह नई दृष्टि के साथ सामाजिक जीवन को चित्रित करता है। व्यक्तित्व निर्माण की क्रिया निरंतर चलती रहती है। व्यक्तित्व पर बाल्यकाल के संस्कार, पारिवारिक वातावरण, नैतिक मूल्य, जन्मगत संस्कार, शिक्षा एवं युगीन परिस्थितियों का प्रभाव आदि देखा जा सकता हैं। किसी भी लेखक के व्यक्तित्व को पहचाने बिना हम उसके कृतित्व को सही ढ़ंग से समझ पाने में असमर्थ होते हैं। रचनाकार की रचना में उसका व्यक्तित्व प्रतिफलित होता है। उसके साहित्य सृजन को व्यक्तित्व से अलग करके नहीं देखा जा सकता। लेखक के व्यक्तित्व का निर्माण उसके आसपास के परिवेश एवं संस्कारों से होता है। अत: प्रभा खेतान के साहित्यिक रचनाओं से झाँकने वाले निर्भीक स्वतंत्र विचारवाले व्यक्तित्व को जानने परखने के लिए उनके परिवेश तथा जीवन को जानना आवश्यक होगा।

लेखक की रचना प्रक्रिया जानने के लिए उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाली ईकाइयों की जानकारी जरूरी हो जाती है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्तित्व का निर्माण मुख्यत: दो ईकाईयों से होता है-

1) अनुवंशिकता और

2) वातावरण

अनुवंशिकता में बुद्धि, प्रतिभा, मन की बनावट, शरीर की रचना, रंग आदि बातें आती हैं। वातावरण, परिवेश या परिस्थिति इसके अंतर्गत घर, परिवार, जाति, समाज, शिक्षा, मित्र तथा बाहरी परिवेश से प्राप्त सभी ईकाइयाँ आ जाती हैं। इन दोनों के समुचित समन्वय से ही संपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण होता है। प्रतिकूल वातावरण को अनुकूल बना लेने की शक्ति अनुवंशिकता से प्राप्त होती है और कई बार अनुकूल वातावरण होते हुए भी व्यक्तित्व टूटने-बिखरने लगता है। अनुवांशिकता से बुद्धि या प्रतिभा प्राप्त हो परंतु अनुकूल वातावरण न हो तो बुद्धि और प्रतिभा कुंठित हो जाती है। नब्बे के दशक में जिन रचनाकारों ने अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है और जो साहित्य जगत में ही नहीं अपितु आर्थिक जगत में भी मशहूर है, ऐसे लेखकों में प्रभा खेतान का नाम अग्रणी है। अपने छह उपन्यासों के माध्यम से हिंदी साहित्य में हलचल मचानेवाली यह एक सशक्त लेखिका है। अपने कथ्य के साथ-साथ भाषा, मुहावरें, शब्द-भंडार सभी पर उनका विलक्षण अधिकार है। उनके उपन्यासों में पाठक को बाँधकर रखने की शक्ति है। वे कुशाग्र बुद्धि, उदार हृदया, मानवीय संवेदना से युक्त प्रसिद्ध उद्योजिका तथा स्त्री चेतना की धनी है।

प्रभा खेतान के जीवन से संबंधित तथ्यपरक जानकारी के अभाव में हमने उनकी 'अन्या से अनन्या' इस आत्मकथा को प्रामाणिक मानकर उनके जीवन को व्याख्यायित करने का प्रयास किया है।

1.1 व्यक्तित्व-

1.1.1 जन्म-

राजस्थान के चुरू क्षेत्र में सुजानगढ़ के कस्बे से कलकत्ता के बालीगंज, मकान नं.71 में रामचंद्र खेतान के पाँच बेटों में से एक श्री. लादूरामजी खेतान के संकीर्णतावादी हिंदू, सनातनी परिवार में पाँचवी संतान के रूप में 1 नवंबर 1942 को प्रभा जी का जन्म हुआ था।

1.1.2 माता-

उनकी माता का नाम पुरनी देवी खेतान था। वह एक विद्रोहिणी एवं महत्वाकांक्षी महिला थी। वह अपनी बेटियों को अपनी तरह नहीं रखना चाहती थी।

वह कहती थी- "औरत को आत्मनिर्भर होना चाहिए। जिंदगी में जोखम उठाना सीखना चाहिए।"[1] वह अपनी बेटियों को हर पल कुछ प्राप्त करने हेतु प्रेरित करती हुई कहती है- "चाँद को छूने की कल्पना करो तो खजूर के पेड़ तक पहुँचोगे। अरे तुम्हारी चाहना ही सीमित रहेगी तो आगे कैसे बढ़ोगे? जो मिले उसी में संतोष खोज लेना भला यह भी कोई बात हुई?"[2] वह अपनी बेटियों को निड़र करने हेतु कहती- "तुम लोग तो पढ़ी-लिखी लड़कियाँ हो, हमारी तरह बात-बात पर टिसुए ढलकाने मत बैठ जाना।"[3]

वह अपनी बेटियों को अपने पैरों पर खड़ी होने की सीख देते हुए कहती है- "तुम लोग जरूर रूपया कमाना, अपने पैरों पर खड़ी होना।"[4] स्त्री जन्म के बारे में अपने माता के विचार प्रस्तुत करते हुए प्रभा जी कहती है- "स्त्री होना मात्र अम्मा की नजर में पाप है एक हीन स्थिति है, गुलामों का जत्था है जो बिना मालिक के जी नहीं पाएगी।"[5] उनकी माँ अपने बच्चों को ईमानदारी के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करती है। पर अपनी बेटियों को प्रेरणा एवं प्रोत्साहन देनेवाली यह माँ बेटी प्रभा के साथ दुर्व्यवहार करती है। मारवाड़ी परिवार में बेटी का होना ही गुनाह था। पुराने खयालों के समृद्ध परिवार में प्रभा के जन्म लेने पर कोई खुशी नहीं मनाई गई। बच्ची के आगमन के साथ माँ श्रीमती पुरनी देवी की बीमारी भी शुरू हो गई। प्रभा को न माँ का प्यार मिला न ही उनके स्तनों का दूध। माँ श्रीमती पूरनी देवी को यह संतान कभी अच्छी नहीं लगी।

सभी भाई-बहन गोरे और सुंदर थे। प्रभा का रंग सावला था। इसीलिए भी वह माँ की उपेक्षा का कारण बनी। प्रभा स्वस्थ थी। अत: मात्र 9 वर्ष की उम्र में उसे मासिक धर्म शुरू हो गया। बढ़ता हुआ कद और किशोरावस्था के सारे परिवर्तन प्रभा में दिखने लगे थे। प्रकृति की देन का सारा दोष माँ उस पर लगाती और उसे कोसती रहती। प्रभा जी लिखती है- "भाटा, पत्थर, बोकी, गधी, भंगन उपाधियों से विभूषित होकर मैं कपड़े बदलने गई।"[6]

माता ममता का सागर एवं प्रेम की मूर्ति होती है। उसका मन बच्चे के प्रति प्यार से भरा हुआ होता है, लेकिन प्रभा जी का दुर्भाग्य यह है कि वे परिवार में माँ

द्वारा उपेक्षित एवं अपमानित रही है। वह माँ के प्यार के लिए तरसती रही। अपनी व्यथा व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा है- "कैसा अनाथ बचपन था। अम्मा ने कभी मुझे गोद में लेकर चूमा नहीं। मैं चुपचाप घंटों उनके कमरे के दरवाजे पर खड़ी रहती। शायद अम्मा मुझे भीतर बुला लें। शायद.... हाँ शायद अपनी रजाई में सुला ले। मगर नहीं, एक शाश्वत दूरी बनी रही हमेशा हम दोनों के बीच। अम्मा मेरी बातों को समझ नहीं पाती थीं।"[7] बचपन का यह दर्द उन्हें बार-बार सताता था। कामयाबी के शिखर पर पहुँचने के बाद भी यह टीस उनके मन में अंत तक बरकरार रही।

1.1.3 पिता-

प्रभा जी के पिता प्रसिद्ध उद्योगपति श्री. लादूराम खेतान थे। वह सुधारवादी, आदर्शवादी एवं गांधीवादी थे। वह बालविवाह के बिलकुल खिलाफ थे। जब प्रभा जी की माता उनके बचपन में उनकी शिक्षा रोककर जब उनकी शादी की बात छेड़ती तब उसके विरोध में पिता जी खड़े होते है। वे लड़कियों की शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते थे। उनकी इच्छा थी उनकी लड़कियाँ ज्यादा से ज्यादा पढ़े। पत्नी ने स्कूल से बच्चियों के नाम निकालने पर उन्होंने कहा था- "इन लड़कियों को पढ़ने भेजो, इन्हें मैं ऊँची शिक्षा दिलाना चाहूँगा।"[8] प्रभा जी के पिता उनसे बहुत प्रेम करते थे, परंतु प्रभा जी का दुर्भाग्य था कि प्रेम करने वाले उनके पिता जब वह साढ़े नौ साल की थी तब उन्हें छोड़कर दुनिया से ही चले गए। उस दिन के बाद से वह अपने ही घर में अपने आप को असुरक्षित महसूस करने लगी थी।

प्रभा जी के पिता उच्च विचारों के धनी थे। पितृत्व की देन उनका उद्योजक बनना था। पिता के कदम पर कदम रखकर वह आगे चलकर एक सफल उद्योजिका के रूप में प्रसिद्ध हुई। उनके पिता धर्म, जाति आदि की व्यवस्था के प्रति क्रोध व्यक्त करते हुए कहते- "मारवाड़ी-बंगाली के पचड़े में मत पड़ो, खुद को भारतीय समझो। हम स्वतन्त्र भारत के नागरिक हैं।"[9]

1.1.4 दाई माँ-

प्रभा जी का पालन-पोषण दाई माँ द्वारा हुआ, वही उनकी अभिभावक भी थी। प्रभा जी का सबसे ज्यादा लगाव दाई माँ से ही था। वह उनकी हर बात का ख्याल

रखती थी। लेखिका के जीवन की सुख-दुखमयी घटनाओं की साक्षी थी। दाई माँ के बारे में खुद लेखिका ने कहा है- "दाई माँ मेरा सहारा, मेरा आश्रय थी। अम्मा के क्रोध, भाई-बहनों का तूफानी वेग, गरजते बादल, कड़कती बिजलियाँ, दाई माँ इन सबसे मुझे बचाकर रखती।"[10] पिता की मृत्यु के बाद उनका खयाल रखनेवाली, उन्हें प्यार करनेवाली दाई माँ ही थी। प्रभा जी ने यह स्वीकार किया है - "दाई माँ के अलावा मेरा कोई नहीं।"[11]

1.1.5 भाई-बहन और अन्य रिश्तेदार-

प्रभा जी के परिवार में सात भाई-बहन थे। भगवती, सल्लो, पुष्पा एवं गीता उनकी चार बहनें थीं। प्रभा पाँचवीं संतान थी। इसलिए घर में उनकी उपेक्षा ही होती रही। उनकी माँ जितना प्रेम गीता से करती थी उससे ज्यादा अपमान प्रभा का करती थी। उन्होंने एक जगह खुद अपना दुख प्रकट करते हुए कहा है- "माँ ने प्यार नहीं दिया यह तो समझ रही थी, क्योंकि मैं ठहरी काली। माँ की तरह गोरी नहीं। मैं बहुत शान्त, गीता की तरह स्मार्ट नहीं, मुँह पर फटाफट जवाब नहीं दे पाती, लेकिन मैं पढ़ने में तो अच्छी थी, क्या यह काफी नहीं था?"[12]

माँ के समान भाई-बहन भी उनके साथ दुर्व्यवहार करते थे। उन्हें उनके साथ खेलने नहीं देते थे। छोटी प्रभा कोने में सीढ़ियों पर बैठकर एकांत में पंछियों से बातचीत करती तो वे उन्हें चिढ़ाते और रूलाते थे। वे भाई-बहनों के प्यार से भी वंचित रही। उनके द्वारा बार-बार सतायी एवं प्रताड़ित होती रही। उनके बड़े भाई ने जब वह नौ साल की थी तब उनका यौन शोषण किया था। उनका परिवार भरा-पूरा था। उन्हें चाचा-चाची, मामा-मामी, नानी एवं ताई आदि थे।

1.1.6 बचपन के दोस्त-

बचपन में रामदुलारी का बेटा खेदरवा उनका सबसे अच्छा दोस्त था और पुष्पा, वंदना, स्वर्णलता, उषा आदि उनकी सहेलियाँ थी। कॉलेज में जाने के बाद तो किताबें ही उनकी दोस्त बनी थी।

1.1.7 शारीरिक वर्णन एवं वेशभूषा-

प्रभा जी साँवले रंग की थी। उनके लंबे-लंबे बाल थे। नौ साल की उम्र से ही माँ के कहने पर वह साड़ी पहनने लगी थी।

1.1.8 पसंद-

जापानी शिफॉन की साड़ियाँ उनकी कमजोरी थी। उन्हें खाने में हलवा, पूड़ी और खीर बेहद पसंद थी।

1.1.9 पारिवारिक स्थिति-

प्रभा जी का परिवार कोलकत्ता में एक प्रतिष्ठित परिवार के रूप में प्रस्थापित था, किंतु पिता की मृत्यु के बाद परिवार की आर्थिक स्थिति बाहर से दिखावे की और अंदर से खोखली होती गई। इसे सँभालने के लिए परिवार वालों को बहुत प्रयत्न करने पड़े।

1.1.10 शिक्षा एवं दीक्षा-

प्रभा जी की प्रारंभिक शिक्षा कोलकत्ता में हुई। प्रारंभ में गोखले मेमोरियल कान्वेट स्कूल में प्रभा जी का दाखिला किया गया। कुछ दिनों के उपरांत उनकी अम्मा ने उनका और गीता का नाम इस स्कूल से काट लिया। वह उन्हें घर बिठाकर राई-जीरा चुनना तथा सिलाई-कढ़ाई करना सिखाना चाहती थी, परंतु आदर्शवादी पिता की इच्छा थी कि वह अपनी बेटियों को ऊँची शिक्षा दिलाकर उन्हें स्वावलंबी बनाए। चौथी से लेकर ग्यारहवीं कक्षा तक की उनकी स्कूली शिक्षा बालीगंज शिक्षा सदन कोलकत्ता में हुई। प्रभा जी के लिए बालीगंज शिक्षा सदन की पढ़ाई का माहौल बड़ा अच्छा रहा है। यहाँ शुरू से अंत तक उन्हें हिंदी की प्रसिद्ध लेखिका मन्नू भंडारी ने पढ़ाया। साहित्य की दुनिया में प्रभा जी ने उन्हीं के कदमों पर चलना चाहा।

तत्पश्चात उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज कलकत्ता से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। वे एकमात्र मारवाड़ी लड़की थी, जिसने प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रवेश लिया था। जहाँ लड़के-लड़कियाँ साथ पढ़ते थे। प्रोफेसर वर्ग भी अत्यंत विद्वान था। उन्हें कक्षा में यह निर्देश दिया जाता था कि वे सौभाग्यशाली छात्र है, क्योंकि वे कलकत्ता के अग्रणी महाविद्यालय की छात्र है। प्रेसीडेंसी कॉलेज में उनके जीवन में बहुत-सा परिवर्तन

आया। उच्च शिक्षा को लेकर उन्हें निरंतर पारिवारिक विरोध सहना पड़ा। उन्होंने एम.ए. की फीस भरने के लिए अपनी सहेली से पैसे उधार लिए थे, क्योंकि अम्मा हर महीने उसकी पढ़ाई का खर्चा उठाने में असमर्थ होने की बात कहती थी। बड़े भैय्या गीता को हर महीने बराबर रूपये देते परंतु प्रभा को नहीं। इसलिए प्रभा जी अपनी माँ से कहती है - "माँ ! भैया, गीता को पैसे देने में कभी मना नहीं करते, मैं ही तो आप सबकी परेशानी का कारण हूँ, ठीक है आज के बाद मैं आपसे पैसे नहीं माँगूगी।"[13]

स्कूली शिक्षा के साथ उन्होंने छोटे-छोटे कोर्स भी किए थे। स्पीड रीड़िंग का कोर्स भी किया था। दस पन्नों का लेख पाँच मिनट में पढ़कर उसकी बारीकियों पर वह बहस कर सकती थी। उन्होंने दर्शनशास्त्र में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी। अमरीका में लॉस एंजेल्स में ब्यूटी थेरोपी का कोर्स किया था।

1.1.11 विवाह और अनोखा रिश्ता-

प्रभा खेतान ने जीवन के अंतिम समय तक विवाह नहीं किया था। उनके व्यक्तित्व निर्माण में डॉ.सर्राफ का विशेष योगदान रहा। 22 वर्ष की अवस्था में आँखों का इलाज कराने गई प्रभा डॉ.सर्राफ से प्रेम करने लगी। आँखों के रास्ते कब डॉ.सर्राफ प्रभा जी के हृदय सिंहासन पर विराजमान हो गए इसका पता उन्हें भी नहीं चला। डॉ.सर्राफ और प्रभा जी में 18 साल का अंतर था। इन दोनों में केवल आयु का ही अंतर नहीं था बल्कि डॉ. सर्राफ एक विवाहित पुरुष के साथ-साथ पाँच बच्चों के पिता भी थे। डॉ.सर्राफ प्रभा जी से प्रेम तो करते थे लेकिन उन्हें सात फेरों के बंधन में बांध नहीं सकते थे। वे समाज से डरते थे। प्रभा जी की राय में भी सात फेरों का कोई महत्व नहीं है। विवाह और प्रेम तो दो अलग-अलग घटनाएँ हैं। जिससे आदमी का मन मिले वही बंधन होता है। जिससे प्रेम हो गया वही विवाह होता है।

यह एक अनोखा रिश्ता था। उसे क्या नाम दे इसके संबंध में प्रभा जी कहती है- "मैं क्या लगती थी डॉक्टर साहब की? मैं क्यों ऐसे उनके साथ चली आई? प्रियतमा, मिस्ट्रेस, शायद आधी पत्नी, पूरी पत्नी तो मैं कभी नहीं बन सकती।"[14] डॉ.सर्राफ का उनके जीवन में स्थान अनन्य साधारण था। वह उनके लिए सबकुछ थे। उनके लिए अपनी जान न्यौछावर करने तक वह तैयार थी। वह एक जगह कहती है-

"डॉक्टर साहब मेरे लिए बरगद की छाँव थे। मेरी जिन्दगी का पड़ाव, मेरा सब कुछ....। डॉक्टर साहब के अलावा और किसी से मैं क्यों नहीं जुड़ पाती।"[15] डॉ.सर्राफ के साथ प्रभा जी का रिश्ता समाज को मान्य नहीं हो सकता था। पर प्रभा जी को समाज से कोई सरोकार नहीं था।

1.1.12 प्रेरणा एवं प्रोत्साहन-

प्रत्येक क्षेत्र में प्रेरणा स्त्रोत का अधिक महत्व रहता है। साहित्य सृजन के लिए साहित्यकार को भी प्रेरणा एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ती है। प्रेरणा स्त्रोत परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। जिससे आचार, विचार और व्यवहार में परिवर्तन हो जाता है। यशपाल जी का मन्तव्य है- "चाहे जिस उद्देश्य से लिखा जाए, लिख पाने के लिए प्रेरणा का होना तो अनिवार्य ही है। लेकिन सभी अवस्थाओं और परिस्थितियों में प्रेरणा का स्त्रोत एक ही हो या एक जैसा हो यह आवश्यक नहीं समय-समय पर प्रेरणाएँ बिल्कुल अलग ढ़ंग की हो सकती है।"[16]

अंतर्मन में छुपे ज्ञान के अकूत मंजर को जागृत करने के लिए बाह्य उद्दीपक प्रेरित करता है और क्रियान्वित की ओर बढ़ाता है। प्रभा को कभी प्रकृति ने, कभी शिक्षकों ने तो कभी आत्मीय जनों ने प्रेरित किया। समकालीन परिस्थितियों से उद्वेलित होकर भी प्रभा ने लिखा। उनके व्यक्तित्व एवं साहित्यिक अभिरूचि की अभिवृद्धि में कतिपय व्यक्ति प्रेरक रहे है। उनकी माँ विद्रोही थी। वह किसी पढ़ी-लिखी स्वावलंबी स्त्री को देखकर अपनी बेटियों से कहती- " आखिर हमें क्या मिला ? बस बच्चे पैदा करती रही। अम्मा ने कभी नहीं कहा मेरी तरह बनो। जन्म से वे विद्रोही थीं और विरासत में मुझे उनका विद्रोही स्वभाव मिला।"[17] यही कारण है कि संप्रति प्रभा जी साहित्य और व्यवसाय दोनों क्षेत्रों में प्रतिष्ठापित हो सकी। उनके साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में मन्नू भंडारी भी प्रेरक रही।

डॉ.सर्राफ भी उनके व्यक्तित्व निर्माण में सहायक रहे। उन्होंने ही उन्हें डॉक्टरेट करने का सुझाव दिया था। महाविद्यालयीन जीवन में डॉ.चॅटर्जी उनके आदर्श रहे जो उन्हें उच्च स्तर के ग्रंथों के अध्ययन करने की प्रेरणा देते थे- "भारतीय दर्शन को जरूर पढ़ो, बार-बार पढ़ो। अर्थों की परत-दर-परत खुलती चली जाएगी। हाँ,

तुम्हारे अन्दर तीन बातों का होना जरूरी है- अभीप्सा, जिज्ञासा और संकल्प। और फिर बार-बार दोहराते रहने का अभ्यास।"[18]

उन्होंने यह भी सलाह दी थी कि गीता को केवल धर्म की तरह नहीं पढ़ना चाहिए। बल्कि आजीवन एक महाकाव्य की भाँति पढ़ना चाहिए। इससे विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण की वृद्धि होती है। डॉ.चॅटर्जी का प्रभा के साथ आत्मीय एवं संवेदनात्मक स्तर पर संबंध रहा है। वे प्रभा जी को समझाते हुए कहते हैं- "स्त्री होना कोई अपराध नहीं है पर नारीत्व की आँसू भरी नियति स्वीकारना बहुत बड़ा अपराध है। अपनी नियति को बदल सको तो वह एकलव्य की गुरूदक्षिणा होगी.... किसी भी बाहरी व्यक्ति को गुरू मत स्वीकारना। वह जो सिखाए, सीखना और कृतज्ञता सहित धन्यवाद देकर आगे बढ़ जाना। आत्मा ही आत्मा का गुरू हो सकता है।"[19]

इस तरह प्रभा जी को प्रेरणा और प्रोत्साहन देनेवाले उनके अलग-अलग अभिभावक थे। प्रभा आत्म प्रेरणा के साथ-साथ बाह्य प्रेरणा से आलोकित हुई और उसके अनुसार चली। इसी कारण उन्होंने अपना जीवन एक पूर्ण नारी रूप में ही नहीं बल्कि एक संस्था के रूप में जिंदादिली से जिया।

1.1.13 साहित्य सृजन -

एक स्थान पर प्रेमचंद जी ने कहा है- "लिखते तो वे लोग है, जिनके अंदर कुछ दर्द है, अनुराग है, लगन है, विचार है। जिन्होंने धन और भोग-विलास को जीवन का लक्ष्य बना लिया है वे क्या लिखेंगे ?"[20] प्रभा जी के जीवन में भी दर्द था इसी वजह से वह लेखन कार्य में सफल रहीं। उन्होंने लिखा है "कविता लिखना भी इन्हीं दिनों शुरू किया, कविता के सहारे मैं असहनीय यथार्थ से पलायन कर पाती।"[21]

जब प्रभा सातवीं कक्षा में थी तब उनकी पहली कविता 'सुप्रभात' में प्रकाशित हुई। उन्हें मार्क्स पढ़ना बेहद अच्छा लगता था। उन्होंने बर्टेंड रस्सल का 'मैरिज एंड मॉराल्स' और सार्त्र का 'ला नाशे' एवं 'सीमोन-द-बोउवार की आत्मकथा' पढ़ी थी।

1.1.14 व्यवसायिक अभिरूचि-

साहित्य सृजन के पश्चात प्रभा जी व्यवसाय के प्रति आकर्षित हुई। वास्तव में साहित्य और व्यवसाय इन दो विरोधी कर्तव्य कर्मों के प्रति उनकी आसक्ति हिंदी साहित्य में अद्वितीय ही मानी जाएगी। उन्होंने कीर्ति, सम्मान, आत्मोन्नति में रूचि दिखाते हुए विविध क्षेत्रों में सफलता प्राप्त की। जीवन में सफलता प्राप्ति हेतु उन्होंने अपने आप को उद्योग में झोंक दिया।

अपने अंतरंग मित्र डॉ.सर्राफ की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से वे ब्यूटी थेरोपी के पाठ्यक्रम के लिए लॉस एंजेल्स (अमरिका) गई। वहाँ से लौटने के पश्चात उन्होंने कलकत्ता में 'फिगरेट' नामक महिला स्वास्थ्य केंद्र की स्थापना की। सन् 1970 तक 'फिगरेट' केंद्र से उन्हें मासिक 25 से 30 हजार की आय होती थी। लेकिन ढ़ेर सारी आय देनेवाले इस केंद्र से उन्हें ज्यादा लगाव नहीं था। वह अपने प्यार की कुंठा से बाहर निकलने के लिए बाहरी दुनिया में कदम रखना चाहती थी। उसे किसी दूसरे रास्ते की तलाश थी। नए रास्ते के रूप में वे 1966 में व्यवसाय जगत की ओर उन्मुख हुई। निर्यात व्यापार अपनाते हुए उन्होंने कहा है - "इन कुंठाओं से निकलने का मुझे एक ही रास्ता नजर आया कि मैं अपना व्यापार खड़ा कर लूँ और वह भी निर्यात का, कम-से-कम देश-विदेश घूम तो सकूँगी, लोगों की नजर में इज्जत मिलेगी वह अलग।"[22] वैसे भी उनके परिवार के तकरीबन 18 सदस्य निर्यात उद्योग में लगे हुए थे। सबका अपना अलग-अलग व्यवसाय था। उन्होंने सन 1976 में चमड़े तथा सिले-सिलाए वस्त्रों का निर्यात करने के लिए 'न्यू होराईजेन लिमिटेड कंपनी' की स्थापना की। जिसमें डॉ.सर्राफ और मि.बसू को पार्टनर के तौर पर लिया गया था। आरंभ में प्रभा जी को डॉ.सर्राफ से इस व्यवसाय को लेकर काफी विरोध हुआ। लेकिन अपनी मेहनत और लगन से वह भारत की दस सबलीकृत महिलाओं की श्रेणी में स्थानापन्न हो गयी। 'इंडिया टुडे' में उनकी फोटो छपने लगी। सन् 1976 से वे चमड़े के सामानों का निर्यात करने वाली अपनी कंपनी न्यू होराईजेन लिमिटेड की प्रबंध निदेशक बन गयी।

आगे बढ़ती हुई प्रभा 'कलकत्ता चेंबर्स ऑफ कॉमर्स' की प्रथम महिला अध्यक्ष बनी। महिलाओं को प्रोत्साहन देने हेतु उन्होंने 'कलकत्ता चेंबर्स ऑफ कॉमर्स' के सहयोग से 'प्रभा खेतान पुरस्कार' शुरू किया। सन् 1885 तक प्रभा जी के तीन कारखाने स्थापन हुए। व्यापार जगत में अवतरित होकर उन्होंने अपनी जमीन स्वयं तैयार की और समाज से जमकर मुकाबला भी किया। तभी तो इंडिया टुडे ने उन्हें 'डॉयनामिक महिला' संबोधित किया।

1.1.15 नारीवादी चिंतक-

'फेमिना इब्स वीकली' जैसे साप्ताहिक को पढ़नेवाली प्रभा खेतान के साहित्य में नारीवाद चिंतक के दर्शन होते हैं। बचपन से प्रभा जी मार्क्सवादी विचारों से प्रभावित थी। उन्हीं के शब्दों में- "मार्क्स को पढ़ना बेहद अच्छा लगता है। पहली बार लगा, दर्शन का सम्बन्ध मेरे अस्तित्व, मेरे परिवेश से है।"[23]

प्रभा जी ने स्त्रीवादी तथा दर्शनशास्त्र की किताबों का अध्ययन किया था। जिसमें सीमोन-द-बोउवार की 'सेकेन्ड सैक्स' पुस्तक से उन्हें अधिक प्रेरणा प्राप्त हुई। "कोई जन्म से स्त्री नहीं होती, समाज उसे स्त्री बनाता है"[24] सीमोन-द-बोउवार का यह कथन प्रभा जी को स्त्री मुक्ति आंदोलन की ओर ले गया। वर्जीनिया वुल्फ का भी उनपर प्रभाव था। उन्होंने लिखा है कि, वर्जीनिया वुल्फ को पढ़े हुए एक लंबा अरसा गुजर गया। उनकी पुस्तक 'वन रूम आफ वंस ओन' में नारीवादी बौद्धिकता के लिए सबसे गहन संदेश है। उनके जीवन में इस पुस्तक का अपना विशेष स्थान है।

1.1.16 महान हस्तियों का प्रभाव-

हिंदी साहित्य से विशेष लगाव रखनेवाली प्रभा जी पर हिंदी की कई महान हस्तियों का प्रभाव रहा हैं। जिसमें मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, महादेवी वर्मा, राजेंद्र यादव, यशपाल, निराला, अज्ञेय, बच्चन, त्रिलोचन, केदारनाथ सिंह, प्रेमचंद आदि प्रमुख हैं। इनमें भी मन्नू भंडारी और महादेवी वर्मा का अधिक प्रभाव देखा जा सकता है। छात्र जीवन से ही प्रभा जी को महादेवी वर्मा प्रिय थी। जितनी वह प्रिय थी उतना ही उनका गद्य साहित्य। महादेवी वर्मा उनके लिए एक आदर्श रही। स्वयं महादेवी न बन सकने का दर्द उनके सीने में हमेशा रहा।

महादेवी के विचारों को सुन प्रभा जी ने अपने आपको सौ दीयों को जलानेवाला अंगारा बनाना चाहा। स्त्री की पारंपारिक भूमिका के लिए चुनौती बनी मीरा भी प्रभा जी की आराध्य रही। वे अपनी गुरू मन्नू भंडारी से भी प्रभावित थी।

वह कृष्णा सोबती की भी कायल थी। लेकिन उनके विचारों से वह कभी सहमत नहीं हो पायी। हिंदी लेखकों में उन्हें प्रेमचंद हमेशा अच्छे लगे क्योंकि प्रेमचंद के साहित्य में उन्हें बोध नजर आता। उन्हें प्रेमचंद का हर नायक आधुनिक लगता, जो कभी अपने कर्म से पीछे नहीं हटता।

प्रभा जी के जीवन में 'हंस' पत्रिका के संपादक तथा महान लेखक राजेंद्र यादव का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा। आरंभ में प्रभा जी उनके विचारों से इतनी प्रभावित नहीं हुई थी। लेकिन बाद में उनके प्रति लगाव निर्माण हुआ। अनेक जगहों पर प्रभा जी ने यादव जी का साथ दिया। वे यादव जी से बहन, बेटी, दोस्त, बंधु और शायद निर्माता के रूप में जुड़ी हुई थी।

1.1.17 'अनुसंधाता' और अनुवादक-

प्रभा जी को बचपन से साहित्य सृजन के प्रति विशेष लगाव था। उनके इसी सृजन कार्य को तथा समाज के प्रति निर्मित दृष्टिकोण को देखकर एक दिन डॉ.सर्राफ ने उन्हें पीएच.डी. करने की सलाह दी। डॉ.सर्राफ ने कहा - "तुम दिन-रात कुछ न कुछ पढ़ती रहती हो, क्यों नहीं तुम डॉक्टरेट कर लेतीं ? अच्छा रहता।"[25]

दर्शनशास्त्र में स्नातकोत्तर डिग्री हासिल करनेवाली प्रभा ने मशहूर फ्रांसीसी दार्शनिक ज्यां पॉल सार्त्र के अस्तित्ववादी विचारों को लेकर 'ज्यां पॉल सार्त्र का अस्तित्ववाद' इस विषय में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। सार्त्र का उनके जीवन में महत्वपूर्ण स्थान था। सार्त्र उनके प्रिय लेखक और वैचारिक प्रणेता थे। प्रभा जी ने 'सेकेण्ड सेकस' का हिंदी अनुवाद किया।

1.1.18 सफलताओं के शिखर पर -

कहते हैं कि, 'हिम्मत की कीमत होती है, प्रभा के जीवन को जानने के बाद यह सिद्ध होता है। बचपन में प्यार को तरसती बच्ची, अपने ही घर में असुरक्षित

किशोरी, बंगाली सहपाठियों से अपने मारवाड़ी समाज को लुटेरे इस ताने को सुनती यह छात्रा एक दिन सफलता की बुलंदियों पर पहुँच गयी।

नदी की धारा के साथ तैरने वाले जीवन को आसानी से जी लेते हैं, मगर धारा के विपरीत बहने वालों को संकटों का सामना करना पड़ता है। साहस के कारण वह धारा को अपनी ओर मोड़ लेते है, पर वे धारा के साथ बहने वालों के दिल का नासूर भी बन जाते हैं। प्रभा ने मारवाड़ी समाज की रूढ़ियों से 'परदा' उठाया और कुंठाओं से घिरी मारवाड़ी स्त्री को एक राह दिखाई। नारी की क्षमता को समाज के सामने उदाहरण के रूप में रखा। प्रभा की सफलता की कहानी उनका आत्मकथ्य बयान करता है- "मैंने अपने-आपको बचाया है, अपने मूल्यों को जीवन में सँजोया। हाँ, टूटी हूँ, बार-बार टूटी हूँ, पर कहीं तो चोट के निशान नहीं.... दुनिया के पैरों तले रौंदी गई पर मैं मिट्टी के लोंदे में परिवर्तित नहीं हो पाई। इस उम्र में भी एक पूरी-की-पूरी साबुत औरत हूँ, जो जिन्दगी को झेल नहीं रही बल्कि हँसते हुए जी रही है, जिसे अपनी उपलब्धियों पर नाज है। दोस्ती का हाथ बढ़ाकर जिसकी गर्म हथेलियाँ हर किसी को अपने करीब खींच लेती हैं।"[26]

1.1.19 समाज सेवी -

खुद के केंद्र से बाहर निकलकर अन्यों के लिए नि:स्वार्थ भाव से किए जानेवाले कार्य ही समाज सेवा के रूप में जाने जाते हैं। प्रभा जी का संबंध एक धनी परिवार से रहा। पैसे वालों का अपना अलग समाज है, परंतु प्रभा का जुड़ाव गरीबों के साथ रहा। उन्होंने गरीबों के जीवन को करीब से देखा। नारी समाज की स्थितियों को उन्होंने गहराई तक जान लिया था। विदेशों में घूमते हुए प्रभा को नारी की दशा को और भी समझने का मौका मिला। प्रभा का रूझान कमजोर एवं शोषितों के प्रति अधिक रहा।

अपने जीवन की परिस्थितियों के कारण प्रभा मजबूत होती गई और साहित्यिक तथा व्यवसायिक जगत में स्थापित होते-होते कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़ गई। प्रभा ने पैसों को दूसरों के हितार्थ खूब बाँटा। अपनी आत्मकथा में प्रभा लिखती है- "उदार हाथों से पैसा लुटाया है मैंने, जी भरकर दिया है आसपास के लोगों को।

सम्पर्कों ने खूब-खूब फायदा उठाया है इसका। धन को जितना समेटूँगी उतनी गरीब हो जाऊँगी। मुझे कृपण और ओछे मन के लोग कभी पसन्द नहीं आते।"[27]

आगे बढ़ने की इच्छा रखनेवालों की मदद के लिए प्रभा हमेशा आगे रहती। अनेक संस्थाओं के माध्यम से प्रभा ने लोगों की सहायता की। अंतरराष्ट्रीय मारवाड़ी सम्मेलन की युवा शाखा तथा प्रभा खेतान फाउण्डेशन के साझा कार्यक्रम 'सभी के लिए शिक्षा' के तहत प्रभा द्वारा एक सुंदर कार्यक्रम का संचालन यह समाज सेवा में बड़ा कदम रहा। इसमें गरीब और मेधावी छात्र-छात्राओं के लिए विशेष प्रबंध रखा गया। प्रभा का मानना था कि शिक्षित पीढ़ी ही भारत का भविष्य है। इसी कारण उनका शिक्षा के प्रति सेवा-सहयोग भाव सदैव रहा। छात्राओं का साहित्य के प्रति रूझान हो, इसीलिए प्रभा ने 'प्रभा खेतान प्रतिभा पुरस्कार' शुरू किया। इसमें राजस्थान की साहित्यिक छात्रा प्रतिभाओं को पुरस्कृत किया गया।

प्रभा खेतान स्वयं 'प्रभा खेतान फाउण्डेश्न' की संस्थापक अध्यक्ष थी। इस संस्था के माध्यम से उन्होंने विशेष सामाजिक योगदान दिया। वे अनेक सामाजिक गतिविधियों में सहभागी रहीं। प्रभा खेतान दातव्य न्यासों से जुड़ी रहकर पूरे भारत में सक्रिय रहीं। उन्होंने रेडक्रॉस सोसायटी के माध्यम से भी काफी लोगों की मदद की। वे रेडक्रॉस सोसायटी के कल्याण शाखा की चेयरपर्सन भी रही थी।

'देशभक्त ट्रस्ट' में भी न्यासी के रूप में प्रभा का योगदान उल्लेखनीय रहा। भारत के पूर्व चुनाव आयुक्त टी. एन. शेषन जैसे लोगों के साथ प्रभा का इस ट्रस्ट में न्यासी होना अपने-आप में सक्रियता का द्योतक है। उन्होंने जिला सैनिक बोर्ड, कलकत्ता की मानद सदस्या के रूप में भी सैनिक कल्याणार्थ कार्य किया वे गरीब और असहायों की मदद के लिए सदैव आगे बढ़ी। राष्ट्रसेवा के निमित्त तो उन्होंने अपना सर्वस्व अर्पण कर ही दिया था। सन् 1962 में नेहरू जी के आह्वान पर उन्होंने अपनी प्रिय धरोहर सोने के गहने भी दान कर दिए। प्रभा जी ने कभी नहीं देखा कि समाज ने उनको क्या दिया, बस वे तो खुले हृदय से समाज सेवा हेतु जैसा भी बन पड़ा समर्पण करती रही।

1.1.20 स्त्री के प्रति दृष्टिकोण-

प्रभा ने अपने आसपास की स्त्रियों के घुटन भरे जीवन से जानना चाहा कि आखिर नारी की इस स्थिति का कारण क्या है? शायद सबसे बड़ा कारण अशिक्षा और पैसा ही है। यदि स्त्री आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो जाए तो एक हद तक वह स्वतंत्र हो सकेगी। वह नारी विषयक कार्यों में सक्रिय रूप से भागीदार रही। उन्होंने स्त्री शिक्षा के प्रसारार्थक भी कदम उठाए। प्रभा खेतान फाउण्डेशन के द्वारा स्थाई कोष बनाकर 'कलकत्ता चेम्बर ऑफ कॉमर्स' के माध्यम से 'प्रभा खेतान पुरस्कार' की स्थापना की। अपने क्षेत्र में विशेष योगदान देनेवाली किसी महिला को प्रति वर्ष इस पुरस्कार से नवाजा जाता है। पुरस्कार स्वरूप एक लाख रूपये की नगद राशि दी जाती है। यह पुरस्कार अब तक मेघा पाटकर, शबाना आजमी, कपिला वात्स्यायन, मीरा मुखर्जी, वंदता शिवा और उषा गांगुली आदि को मिल चुका है।इस पुरस्कार के संबंध में प्रभा खेतान कहती है, ''यह एक सेल्फमेड स्त्री की ओर से एक सेल्फमेड स्त्री के काम की पहचान और सम्मान है।''[28]

1.2 कृतित्व-

लेखक के कृतित्व को उसके व्यक्तित्व से पृथक करके देखा नहीं जा सकता। उसका कृतित्व उसके जीवन की प्रतिछाया ही होती है। प्रभा खेतान के लेखन का दौर शुरू हुआ कविताओं से और फिर उपन्यास, अनुवाद के साथ-साथ चिंतनपरक साहित्य तक जा पहुँचा। साहित्य और व्यापार दोनों कार्यों को प्रभा जी ने बड़ी ही संजीदगी से पूरा किया। जो भी लिखा व्यापार की भागदौड़ भरी जिंदगी के बीच लिखा।

उनका कृतित्व इस प्रकार है-

काव्यसंग्रह-

1) अपरिचित उजाले (1981) — अक्षर प्रकाशन, प्रा.लि.,2- 36, अन्सारीं रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली, 110002

2) सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं (1982)- इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली

3) एक और आकाश की खोज में (1985) अप्रस्तुत प्रकाशन, कलकत्ता

4)	कृष्णधर्मा मैं (1986)	स्वर समवेत, 6, तनसुक लेन, कलकत्ता, 700070
5)	हुस्नाबानो और अन्य कविताएँ (1987)	स्वर समवेत, 6, तनसुक लेन, कलकत्ता, 700070
6)	अहल्या (1988)	सरस्वती विहार, जी.टी.रोड़, दिलशाद गार्डन, शाहदरा, दिल्ली, 110095

उपन्यास-

1.	आओ पेपे, घर चलें (1990)	सरस्वती विहार, जी.टी.रोड़, दिलशाद गार्डन, शाहदरा, दिल्ली, 110095
2.	तालाबंदी (1991)	सरस्वती विहार, जी.टी.रोड़, दिलशाद गार्डन, शाहदरा, दिल्ली, 110095
3.	छिन्नमस्ता (1993)	राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि., 1 बी. नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, 110002
4.	अपने-अपने चेहरे (1994)	किताबघर प्रकाशन,24 अन्सारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली, 110002
5.	पीली आंधी (1996)	राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि., 1 बी. नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, 110002
6.	स्त्री-पक्ष	14 फरवरी से सबरंग पत्रिका जनसत्ता में 1 अगस्त 1999 तक प्रकाशन

लघु उपन्यास-

1)	अग्निसंभवा	मार्च 1992 से मई 1992 तक	'हंस' मासिक, नई दिल्ली
2)	एड्स	1993	'आज',पूजा वार्षिकांक, कलकत्ता

आत्मकथा

1. अन्या से अनन्या (2007) — राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि., 1 बी. नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, 110002

अनुवाद -

1. साँकलों में कैद क्षितिज (1988) — सरस्वती विहार, जी.टी.रोड़, दिलशाद गार्डन, शाहदरा, दिल्ली, 110095
2. स्त्री उपेक्षिता (1990) — हिंदी पॉकेट बुक्स प्रा. लि.जी.टी.रोड,शाहदरा, दिल्ली 110032

संपादित -

1) एक और पहचान (कविता संग्रह) (1986) — स्वर समवेत 6, तनसुक लेन, कलकत्ता, 700070
1. हंस महिला विशेषांक — 2001 हंस मासिक, नई दिल्ली
2. पितृसत्ता के नये रूप — 2003 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

चिंतन-परक -

1. सार्त्र का अस्तित्ववाद (1984) — सरस्वती विहार, जी.टी.रोड़, दिलशाद गार्डन, शाहदरा, दिल्ली, 110095
2. सार्त्र शब्दों का मसीहा (1985) — सरस्वती विहार, जी.टी.रोड़, दिलशाद गार्डन, शाहदरा, दिल्ली, 110095
3. आल्बेयर कामू: वह पहला आदमी (1993) — सरस्वती विहार, जी.टी.रोड़, दिलशाद गार्डन, शाहदरा, दिल्ली, 110095
4. उपनिवेश में स्त्री (2003) — राजकमल प्रकाशन , प्रा.लि., 1 बी. नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, 110002

5. बाजार के बीच: बाजार के खिलाफ (2004)		वाणीप्रकाशन,21 ए, दरियागंज, नई दिल्ली

प्रभा खेतान ने व्यवसाय की व्यस्तता के बीच भी पूरी लगन से लिखा और सिर्फ लिखा ही नहीं अपितु साहित्य जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान भी बनाया। छोटी-सी कविता से शुरू हुआ प्रभा का साहित्यिक सफर उत्कृष्टता के साथ लेखन की ऊँचाईयों को स्पर्श करने वाला रहा। उनका काव्य, कथा और बौद्धिक धरातल पर लिखा गया चिंतनपरक, शोधपरक साहित्य उन्हें हिंदी जगत में अमर कर गया।

1.2.1 काव्य संग्रह :

प्रभा जी ने छह काव्य संग्रहों का सृजन किया। उनके लेखन की शुरूआत काव्य से ही हुई थी। कविता को वह जिंदगी का दर्पण मानती है। अपने जीवन की त्रासदी, पीड़ा, उपेक्षा एवं अपमान को उन्होंने अपने काव्य में व्यक्त किया ।

1.2.1.1 अपरिचित उजाले :

'अपरिचित उजाले' सन् 1981 में प्रकाशित हुआ। प्रभा जी का यह पहला काव्य संग्रह है जिसमें उनकी 64 कविताएँ संकलित है। इसमें प्रेम इस मूल संवेदना को उन्होंने व्यक्त किया है। प्रेम में संयोग की अपेक्षा वेदना की पीड़ा है। वे अपने प्रेम का बेबाक बयान करती है, जिसमें प्रेम को साहसी बताते हुए समाज की मानसिकता को उभारा गया है। वह प्रेम को अंधेरे रेगिस्तान का झुलसता गुलाब कहती है। वे लिखती है -

"यों प्यार करना कितना मुश्किल होता है,
अंधेरे रेगिस्तान में
गुलाब
झुलसने के लिए बस छोड़ दिये जाते है।"[29]

वे महानगरों की समस्या की ओर संकेत करती है। जहाँ की सड़कों पर गंदे पानी और कीचड़ के कारण घर लौटने की समस्या होती है। बारिश की धार महानगरों में सुख शांति नहीं परेशानी उत्पन्न करती है। गाड़ियों के हॉर्न, डीजल और बारिश की मिली-जुली गंध मन-मस्तिष्क को झकझोर देती है।

वे महादेवी वर्मा के समान दर्द को संजोती हुई दृष्टिगत होती है। वे मानती हैं कि मनुष्य के जीवन में उसी प्रकार उतार-चढ़ाव है जैसे छिपकली ऊपर चढ़ती है और फिसलती रहती है। कभी वे भारतीय विवाहिता के कर्तव्य-कर्म की ओर संकेत करती हैं। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से अपनी माँ के प्रति भी शिकायत की है।

इस संग्रह की कविताओं में प्रेम, उससे उत्पन्न प्रतीक्षा, प्रतीक्षा में बेचैनी, आम आदमी, नगरीय समस्या एवं कवयित्री का मानसिक व्दंव्द उभरा है। प्रभा जी कहती है, कि मेरे तीन मन है। एक मन कविता लिखता है, एक मन प्यार करता है और एक मन केवल अपने लिए जीता है।

1.2.1.2 सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं -

यह सन् 1982 में प्रकाशित प्रभा जी का यह दूसरा काव्य संग्रह है। इसमें उन्होंने 16 कविताओं को संकलित किया। इस संग्रह की भूमिका में उन्होंने काव्य-सृजन को मन की मुक्ति और जीवन दृष्टि माना है। वे कहती हैं - "कविता लिखती हूँ क्योंकि मन को एक राहत मिलती है। जीने की एक समझ, दृष्टि को एक तरलता मिलती है --- कविता मेरे लिए एक अंत: चेतना है- एक भीतर की आवाज, कई बार महज एक ध्वनि ---- कवि पूरी कविता बन बहती हुई ---- मैं इसी एक भीतरी बिन्दु के लिए सजग रहना चाहती हूँ।"[30]

प्रस्तुत संग्रह की कविताओं में प्रेम, वेदना, मनोभाव, आम आदमी की वेदना एवं पारिवारिक संवेदनशीलता दृष्टिगत होती है। उन्होंने व्यष्टि एवं समष्टि के संबंधों को 'अंकुर' इस कविता में व्यक्त किया है। उनकी सूक्ष्म दृष्टि में मनुष्य की आकांक्षा अपनी पूर्णता के लिए प्रतीक्षारत रहती है। वृक्ष को पुष्पित और पल्लवित होने में दीर्घ अंतराल लगता है। परंतु जड़ें उसकी प्रतीक्षा करती रहती है। यही भाव 'चाह की प्रक्रिया' में निहित है। वे आम आदमी के प्रति सहानुभूति रखती है, जो जीने के लिए अविराम युद्ध करता रहता है। उनकी कविता का स्वर भूख और रोटी से भी संबंधित है। इसलिए उनकी कविता में 'स्व' न होकर 'पर' निहित है।

उनकी प्रेम विषयक कविताओं में 'जब तुम थे', 'प्रतीक्षा', 'तुम आये', 'हमारे बीच', 'दरवाजा खुलता है' आदि उल्लेखनीय हैं। उन्होंने मन के सूक्ष्म भावों को

उभारा है। उसका मन सवाल पूछता है कि, प्यार में तूने क्या पाया तब उसका दूसरा मन उसे जवाब देता है -

"प्रेम करने की शक्ति
क्या अपने आप में काफ़ी नहीं
यानी आज भी जब तुम्हें चाह पाती हूँ
लगता है कि मैं जिन्दा हूँ।"[31]

वे मन को अत्यंत कोमल मानती हैं जो छोटी-छोटी बातों से जितना खुश होता है उतना दु:खी भी होता है। नारी की विवशता को 'नियति' में व्यक्त किया गया है। जहाँ नारी विज्ञापन बनकर रह गई है। उनकी लेखनी सामान्य में भी असामान्य भाव व्यक्त करने की क्षमता रखती है।

अकेलेपन की पीड़ा की अभिव्यक्ति 'तुम नहीं समझोगे', 'सपने', 'हौसला' में अभिव्यक्त है। उन्होंने 'नीली का दिन' कविता में उच्च वर्ग की नारी के प्रतिदिन के क्रिया-कलाप को अंकित किया है। 'बोलो माँ' कविता में माँ की ममता साकार हुई है। 'दरवाजा खुलता है' में जीने के लिए प्रेम का महत्व स्पष्ट किया है।

सर्वहारा वर्ग के प्रति संवेदनशील प्रभा की भावना 'अमीनुल्ला तुम!' में व्यक्त हुई है। उनके प्रेम की वेदना 'एक उदास सुबह', 'जब तुम थे', 'तुम आये', 'तुम नहीं समझोगे', 'दरवाजा खुलता है', 'काली दीवार' में अभिव्यक्त है। इस काव्य संग्रह में भाव और आशय की विविधता हैं।

1.2.1.3 एक और आकाश की खोज में -

'एक और आकाश की खोज में' यह सन् 1985 में प्रकाशित प्रभा जी का तीसरा काव्य संग्रह है। इसमें 53 कविताएँ संग्रहित है। वैचारिक एवं दार्शनिक चिंतन को इसमें व्यक्त किया गया है। 'मृत्यु दर्शन' कविता में 'जीवन के जंगल में काल एक कुल्हाडी है' यह भाव व्यक्त हुआ हैं। उनकी कविताएँ 'मैंने नाप लिए हैं हजारों आकाश', 'तुम्हारे पास गई थी', 'मौत और जिंदगी के बीच', 'बहुत से अर्थ है', 'तहखोलो मेरी', 'धोबी अपने घाट पर','तुमसे बड़ी तो', 'भीड़ में' आदि कविताएँ उनकी प्रतिभा-प्रज्ञा की साक्ष्य देती है।

पारिवारिक संवेदना उभारने वाली कविताओं में 'माँ ने कहा', 'पंख उछालती तितलियाँ फूलों पर', 'पत्तों पर' उल्लेखनीय है। इस काव्य संग्रह की कविताओं में सबसे अधिक प्रेम भावना व्यक्त हुई है। इसमें कसक, टीस और वेदना अन्तर्निहित है। उनकी प्रेम विषयक कविताएँ 'तुम्हारी प्रेम भरी आँखें', 'मैंने अपने को', 'एक दिल धड़कता है मेरे भीतर', 'तुम आये, तुम गये' 'इस उदास दिन के बाद' आदि उल्लेखनीय हैं।

उनकी प्रकृति विषयक कविताओं में प्रकृति के संश्लिष्ट चित्र न होकर मन की भावनाओं की प्रतीकात्मकता है। 'तुम्हारे आने की खुशी', 'मैं प्यार करती हूँ हर परिवर्तन से', 'लहर पर लहर', 'मैंने हवाओं से कहा, 'कोई एक फूल खिला बगीचे में' आदि कविताएँ उल्लेखनीय है। उन्होंने मनुष्य की दैनिक जीवन में भौतिकता के बढ़ते प्रभाव के कारण प्रकृति की उपेक्षा को 'सुनो' नामक कविता में रेखांकित किया है-

''सुबह ठीक वक्त पर
तुम्हें चाय सर्व कर दूँगी
तुम्हारे ऑफिस को देर नहीं होगी
आई प्रॉमिस
बस एक बार फिर
चाँद पर चलने की
कोशिश तो करो।''[32]

नगरीय बोध का यथार्थ 'आकाश में उड़ान भरता हुआ', 'मेरे शहर में' स्थानाभाव के कारण' इन कविताओं में दृष्टव्य है। इस काव्य संग्रह की कविताओं का ताना-बाना, प्रेम, प्रकृति, परिवार के चिंतन पक्ष से बुना गया हैं।

1.2.1.4 कृष्णधर्मा मैं -

सन् 1986 में प्रकाशित इस रचना में कवयित्री ने पौराणिक कथ्य को समसामायिक स्थिति में स्पष्ट किया है। इसमें कृष्ण कथा को आधार बनाया गया है। पौराणिक कथा और आधुनिक समाज की प्रासंगिकता स्पष्ट करते हुए कवयित्री कृष्ण

से युगों-युगों तक अवतार लेने का आग्रह करती है। जिससे आम आदमी को अपने दुख से मुक्ति मिलेगी। महाभारत का युद्ध शत्रुओं के घात-प्रतिघातों का साक्षी है। उसी प्रकार आज का व्यवसायी भी व्यवसायिक शत्रुओं के ईर्ष्या-व्देष से आहत है। अभिमन्यू के समान आज का व्यवसायी शत्रुओं के चक्रव्यूह में फँस जाता है। आज का मनुष्य जीवन के महाभारत में योद्धा के समान ही संघर्षरत है। मनुष्य अपने छोटे-से जीवन में सर्वोच्च होने की आकांक्षा रखता है।

आज के समाज में भी द्रौपदी अपने अपमान और अत्याचार के विरूद्ध संघर्षरत है। पर कोई उद्धारकर्ता नहीं है। आज भी अच्छाई-बुराई में संघर्ष होता है। वह लिखती है,

'तुम जानते हो कृष्ण
न कभी रूका है
इतिहास का संघर्ष
न खत्म हुई कभी
नारायण की भूमिका।''[33]

महाभारत कभी खत्म नहीं होता। विजय प्राप्त करके भी पांडवों को महाप्रस्थान ही करना पड़ा है। संप्रति भी मानवता के विरूद्ध दानवता दृष्टिगत हो रही है।

1.2.1.5 हुस्नाबानो और अन्य कविताएँ -

सन् 1987 में प्रकाशित इस काव्य संग्रह में प्रभा जी की 29 कविताओं का संकलन है। प्रथम कविता 'हुस्नबानो' एक दीर्घ कविता है। इस दीर्घ कविता में 'हुस्ना' नामक लड़की के जीवन की आकांक्षाओं का चित्रण किया गया है। उसके पिता कारीगर हैं जो दुबई में अमीरों के मकान बनाने चले गये हैं। लेकिन त्रासदमय हालात यह है कि अमीरों का घर बनानेवाले अब्बा कलकत्ता जैसे महानगर में खुद बेघर है। उसकी बेटी हुस्ना माँ से कहती है -

"अम्मी,
तुम्हीं क्यों नहीं
पैदा कर देतीं

एक छोटा-सा घर

जिसमें रहेंगे

मोहसिन और अब्बा

हम और तुम।"[34]

प्रभा जी का जीवन नगरों-महानगरों से संबंधित रहा है। उन्होंने खुद अकेलेपन की त्रासदी को भोगा है। नगरों में भीड़ में रहते हुए भी मनुष्य अकेला है यह भाव उन्होंने अपनी 'मिसेज गुप्ता अकेली है' इस कविता में व्यक्त किया है।

उनकी अनेक कविताओं में नगरीय परिवेश चित्रित है। 'भीड़ के बीच', 'सड़क कथा', 'मुखौटे में', 'चक्कर मारती हवा', 'जब तक', 'मनोरंजन' आदि। प्रेम के दर्द को चित्रित करनेवाली 'प्यार की चिट्ठी' यह उनकी उल्लेखनीय कविताएँ हैं। वैचारिक कविताओं में 'कवि का दावा', 'शब्दों की हार', 'कविता की सामूहिक हत्या' आदि उल्लेखनीय हैं। समसामायिक आतंकवाद के प्रति चिंता व्यक्त करनेवाली 'कहाँ होंगे बच्चे' यह उनकी बेमिसाल कविता है।

'बड़ी अच्छी मेमसाब' कविता में यह विरोधाभास है कि ब्युटी पार्लर चलाने वाली जेना दुल्हनों का शृंगार तो करती है परंतु खुद दुल्हन नहीं बन पाती। प्रस्तुत संग्रह के संबंध में डॉ. उषा कीर्ति राणावत लिखती है - "रसोई, रोटी, भूख की आग, परियों की कहानी, माँ की गोद, उसकी आत्मीयता, घर की तलाश, प्रेम से उत्पन्न विसंगतियाँ, अजनबीपन, जंगल, समुद्र आदि सारी समस्याओं की संवेदनाओं को रचित इन कविताओं की शीर्षक वाली हुस्ना अपनी गरीबी अभावों में घर ढूँढ रही है तो दूसरी तरफ श्रीमती गुप्ता वैभवपूर्ण जीवन में अकेलेपन की त्रासदी में तिल-तिल कर जी रही है।"[35]

1.2.1.6 अहल्या -

सन् 1988 में प्रकाशित 'अहल्या' प्रभा जी का नारी चिंतन पर आधारित खंडकाव्य है, जिसे प्रभा जी ने स्वयं लंबी कविता कहा है। पौराणिक काल की पात्र 'अहल्या' के माध्यम से कवयित्री ने आज के नारी की व्यथा व्यक्त की है। आज भी नारी न तो इंद्र के मायाजाल से मुक्त हुई है और न ही गौतम के शाप से। आज भी

नारी 'अहल्या' के समान पत्थर बनकर पुरूष के अन्याय और अत्याचारों को सहन करती है। अपनी मुक्ति के लिए किसी राम की प्रतीक्षा करती है। ऐसी परिस्थितियों में प्रभा खेतान का नारीवादी चिंतन कह उठता है -

"लौट आओ,
पथरीली गहराइयों से
निकल आओ
समाधि के अंधेरे से!
आवाज दो, पत्थर हुई आत्मा को।"[36]

अहल्या का दर्द उन्हें दुखी करता है। उनके अनुसार अहल्या को शाप देकर गौतम ने मानवता का अपमान किया है। अहल्या के माध्यम से वह आज की नारी को यह संदेश देना चाहती है कि राम की प्रतिक्षा न करते हुए खुद अपनी मुक्ति के लिए संघर्ष करें।

"उठो,
मेरे साथ
मेरी बहन!
छोड़ दो
किसी और से मिली मुक्ति का मोह!
तोड़ दो, शापग्रस्तता की कारा
तुम अपना उत्तर स्वयं हो अहल्या!
ग्रहण करो,
वरण की स्वतंत्रता।"[37]

इस काव्य कृति का सृजन प्रभा जी की प्रतिभा के लिए एक चुनौती था उन्हीं के शब्दों में "अहल्या के इस दर्द को शब्दों में उतारना बड़ा कठिन है, पर मुझे चेष्टा तो करने दो। कविता पनपती है जब वह एक चाह की शिकार होती है। एक गहरी प्यास जो घट रहा है, केवल उसका वर्णन कविता नहीं होती।"[38]

काव्य के संबंध में उन्होंने 'एक और पहचान' की भूमिका में प्रभा जी ने लिखा है - "कविता जिंदगी का वह दर्पण है जिसमें कवि अपनी वास्तविक तस्वीर देखता है इसमें जिंदगी के प्रति, उसकी सिद्धत के प्रति एक मासूम लगाव होता है। कोई भी अच्छी कविता केवल भीतर से ही नहीं उपजती वह मेहनत भी माँगती है, तराश भी चाहती है..।"[39] प्रभा जी के काव्य की यही सच्चाई है।

1.2.2 उपन्यास -

प्रभा जी काव्य सृजन को विराम देकर उपन्यास विधा की ओर उन्मुख हुई। इसका कारण स्पष्ट करते हुए वे लिखती है -"जीवन जगत के बहुविध प्रसंगों, निजी जीवन की कटु-तिक्त अनुभूतियों, अपने समाज, परिवेश से मिले अनुभव, देखे, भोगे और झेले गए यथार्थ को उसकी पूरी व्यापकता और साफगोई से कहने की जरूरत ने उन्हें उपन्यास विधा की ओर मोड़ा।"[40] उनके उपन्यासों की नायिकाओं में उनके अपने व्यक्तित्व का चित्रण दिखाई देता है। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है - "मेरी कोई कृति मेरे जीवन से अलग नहीं है। 'तालाबंदी' में जो श्याम बाबू है वह मैं हूँ। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया भी मेरा ही प्रतिरूप है। मेरा हर उपन्यास किसी न किसी रूप में मेरी आत्मकथा का ही अंश है जिसे मैंने उपन्यास के रूप में प्रस्तुत करने की चेष्टा की है।"[41] प्रस्तुत शोध-प्रबंध का द्वितीय अध्याय प्रभा खेतान के उपन्यासों के कथ्य से संबंधित होने के कारण यहाँ उनके उपन्यासों का संक्षेप में परिचय दिया जा रहा है।

1.2.2.1 आओ पेपे, घर चलें -

इस उपन्यास में प्रभा जी ने अमरिका प्रवास में जो अनुभव प्राप्त किए उसी को कथ्य बनाया है। यह उपन्यास अमरिकी औरत के जीवन का एक भयानक सत्य उजागर करता है। यह शायद हिंदी का पहला विदेशी परिवेश का उपन्यास है। इसमें अमरिका की जीवन शैली और वहाँ की नारियों की स्थिति का विवेचन हुआ है। इस उपन्यास के संबंध में प्रो. गोपाल राय का अभिमत है - "यह वैश्विक स्तर पर तुफानी जीवन संघर्ष, संबंधो के व्यावसायीकरण, भोगवादी मानसिकता, नस्लवादी मनोवृत्ति, पारिवारिक विघटन, उच्चवर्गीय जीवन के अंर्न्तविरोध, बाहर और भीतर की जिंदगी के तनाव, संबंधहीनता, नकली जिंदगी, पति-पत्नी की टकराहट में टूटते-पिसते बच्चे,

भोग विलास के पीछे अंधी दौड़, आर्थिक समृद्धि के बीच संबंधहीनता और संवेदनशून्यता की पीड़ा का प्रामाणिक अनुभव और गहरी अनुभूति के साथ अंकन करने वाला उपन्यास है।"[42]

1.2.2.2 तालाबंदी -

यह उपन्यास सन् 1991 में प्रकाशित हुआ। श्याम बाबू के माध्यम से उन्होंने खुद के व्यवसायिक जगत में आई हुई परेशानियों को उजागर किया है। व्यवसाय जगत में सफलता प्राप्त करते हुए व्यक्ति किस तरह लालची हो जाता है और अपने रिश्ते-नातेदारों से अलग हो जाता है यह इसमें स्पष्ट हुआ है। मिल में मजदूर और मालिक में होनेवाली तनावपूर्ण स्थितियों का वर्णन भी उन्होंने इस उपन्यास में किया है।

श्याम बाबू के माध्यम से मारवाड़ी समाज की व्यावसायिक दृष्टि व्यक्त हुई है। श्याम बाबू व्यवसाय जगत में सफलता प्राप्त करते हैं। धन का लालच उन्हें अपने परिवारवालों से दूर ले जाता है। अपनी व्यस्तता के कारण वे बीमार माँ की पूछताछ तक नहीं कर पाते तब उन्हें मास्टर हरिनारायण चट्टोपाध्याय का वक्तव्य स्मरण होता है, अर्थ की व्यवस्था सारे मानवीय संबंधों को धुन की तरह खा जाती है।

इसमें पारिवारिक कथा के साथ फैक्ट्री में व्याप्त मजदूर समस्या भी वर्णित है। श्याम बाबू युनियन के बढ़ते प्रभाव से चिंतित है। दूसरी ओर वे अपनी व्यवस्थापकीय बुद्धि के कारण फैक्ट्री में तालाबंदी का ऐलान भी कर देते हैं।

1.2.2.3 अग्निसंभवा -

प्रभा जी का यह उपन्यास 'हंस' मासिक पत्रिका, मार्च 1992 से मई 1992 तक प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास को प्रभा जी ने अध्याय के स्थान पर पहली किश्त, दूसरी किश्त एवं अंतिम किश्त शीर्षकों में विभाजित किया है। संपूर्ण उपन्यास का कथानक तीन दिनों में सिमटा हुआ है। पहली किश्त में पहला दिन दोपहर, दूसरी किश्त में दूसरे दिन रात एक बजे एवं अंतिम किश्त में तीसरे दिन शाम को शीर्षक देकर कथानक का तानाबाना बुना गया है।

चीनी महिला मिसेज पिन युंग येन अर्थात आइवी युंग यह इस उपन्यास की प्रमुख महिला पात्र है। वह अपना घर परिवार चलाने हेतु चीन से हांगकांग आयी है। वह टैक्सी चला कर अपने परिवार को पालती है। आइवी एक स्वाभिमानी एवं ईमानदार महिला है। इसमें प्रभा जी ने आइवी के जीवन के साथ विदेशों में पति द्वारा नारी शोषण के प्रसंग का भी चित्रण किया है। आलोच्य उपन्यास में मुख्य कथा के साथ चीन की राजनीति, वहाँ की क्रांति, मार्क्सवादी दृष्टिकोण आदि को भी उजागर किया गया है।

प्रभा खेतान ने प्रस्तुत उपन्यास में आइवी के टैक्सी ड्रायव्हर से ब्रांच मॅनेजर बनने तक की विकास यात्रा का निरूपण किया है। "आइवी अपनी अस्मिता की सीमाओं का अतिक्रमण कर धुआँ रहित अग्नि की लपटों को अपने भीतर स्वीकारती है। प्रज्वलित होकर एक नये हाशिए पर एक भिन्न प्रकार का आकार बनाती जाती है। इस अग्नि को अपनी संवेदना से जोड़ने के लिए पाठक के पास अनंत संभावनाएँ हैं जो प्रभा जी ने दी है।"[43]

1..2.2.4 एड्स -

'एड्स' लघु उपन्यास सन् 1993 को 'आज' पूजा वार्षिकांक में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का कथ्य सीमित है। इसका नाम 'एड्स' ही यह सूचित करता है कि इसमें समसामायिक प्रश्न को उभारा गया है। इस उपन्यास की कथा का परिवेश विदेशी है।

प्रभा को प्लेन में पास में बैठे पुरूष सहयात्री से वार्तालाप करने की इच्छा नहीं है। वह अकेले क्षणों में जीना चाहती है परंतु वह सहयात्री अपनी जीवन कथा सुनाना प्रारंभ कर देता है। कालांतर में संयोग से अचानक प्रभा एवं उसकी भेट पेरिस में होती है। लेखिका अनुभव करती है कि यह आदमी उनके जीवन में एक घटना की तरह घटता जा रहा है। जब प्रभा जी ने उसकी पत्नी के संबंध में जानना चाहा तो उन्हें पता चला कि उसकी पत्नी एड्स की मरीज है। इसलिए उस आदमी के मन में यह आतंक छाया रहता है कि कहीं उसके भीतर भी एड्स के कीटाणू न हो। उसकी एकमात्र पुत्री जो ग्यारह वर्ष की है। वह अपनी नानी के पास शिकागो चली गई है।

एड्स का यह रोग उसकी पत्नी को उसके प्रेमी से मिला है। वह नियमित हॉस्पीटल जाता हैं और कांच में से अपनी व्यथित पत्नी को देखकर दुखी होता है। इसके पश्चात प्रभा को वह व्यक्ति कभी नहीं मिला। लेखिका ने अत्यंत संवेदनशील होकर इस दांपत्य जीवन की व्यथा व्यक्त की है। उसकी चिंता यह है कि खाड़ी युद्ध के कारण उसके समक्ष व्यवसायिक समस्या उत्पन्न हो सकती है। विदेश की महिलाओं से मिलकर वह अनुभव करती है कि वहाँ भी नारी अकेलेपन की त्रासदी को भोग रही है, पति के द्वारा उपेक्षित एवं प्रताड़ित है।

1.2.2.5 छिन्नमस्ता -

प्रभा खेतान का सन् 1993 में प्रकाशित 'छिन्नमस्ता' एक बहुचर्चित उपन्यास है। यह आधुनिक नारी की त्रासदी और उसके संकल्प का एक प्रामाणिक दस्तावेज है। उपन्यास के परिवेश में मारवाड़ी समाज है। लेकिन प्रिया की कथा मारवाड़ी समाज की कथा न रहकर संपूर्ण स्त्री वर्ग की कथा है। संपन्न परिवार में भी स्त्री की नियति अश्रुपूरित है। प्रिया सांवली, दंतुली और परिवार की अवांछनीय चौथी लड़की है। प्रिया का जन्म अपशकुन समझा गया। निराश माँ बीमार हुई और वह बच्ची की घोर उपेक्षा करने लगी। वह अपनी बच्ची को कभी गोदी में नहीं उठाती। उसे निरपेक्ष प्यार मिलता है केवल दाई माँ से। बच्ची की दुनिया उजड़ जाती है। नौ साल की उस मासूम पर काम पिशाच्च बड़ा भाई 'विजय' बलात्कार करता है। वह निरंतर इस कच्ची कली से अपनी हवस मिटाता रहता है। बच्ची को चुप रहने के लिए सौगंध दिलाई जाती है। विजय की लैंगिक भूख के शमन के कारण प्रिया दस वर्ष में चौदह बरस की लगती है। प्रिया घोड़ी, मरणजोगी, भाटा, पत्थर, गधी, भंगन आदि तिरस्कारपूर्ण पदावलियों से विभूषित की जाती है। विजय घर का मुखिया होने के नाते छोटे भाई अजय का आर्थिक शोषण एवं छोटी बहन प्रिया का यौन शोषण करता है।

मनुष्य के रूप में अपनी जिजीविषा और स्त्री के रूप में अपनी संवेदनशीलता को जीती हुई प्रिया अपना स्वतंत्र तथा सफल व्यवसाय स्थापित करती है। वह अपने काम में अपने आप को व्यस्त कर लेती है। वह केवल धन प्राप्ति के लिए व्यवसाय नहीं करती। बल्कि वह अकेलेपन से उभरना चाहती है। वह अतीत को विस्मरण कर

जीवन संघर्ष से जूझना चाहती है। यह उपन्यास प्रिया के संघर्ष और व्यथा की करूण गाथा है। "नारी विमर्श' की प्रखर चिंतक और उपन्यासकार प्रभा खेतान का यह चर्चित उपन्यास स्त्री के शोषण, उत्पीड़न और संघर्ष का जीवन्त दस्तावेज है। सम्पन्न मारवाड़ी समाज की पृष्ठभूमि में रची गई इस औपन्यासिक कृति की नायिका प्रिया परत-दर-परत स्त्री जीवन के उन पक्षों को उघाड़ती चलती है जिनको पुरूष समाज औरत की स्वाभाविक नियति मानता रहा है और इस प्रक्रिया में वह हमें स्त्री की युगों-युगों से संचित पीड़ा से रूबरू कराती है।"[44]

1.2.2.6 अपने-अपने चेहरे -

यह उपन्यास सन् 1994 में प्रकाशित हुआ। इसमें लेखिका ने नारी की नियति के एक अन्य पहलू को परिभाषित करने का प्रयास किया है। लेखिका का मानना है कि विवाह, पति, बच्चे, परिवार आदि से परे भी औरत का अस्तित्व है। औरत की जिंदगी सिर्फ पुरूष की तलाश नहीं है, अपितु उसका अपना अस्तित्व है। उसी के लिए औरत कितनी पीड़ा सहती है, कितना संघर्ष करती है और कैसे हारती-टूटती तार-तार होती है, यही 'अपने-अपने चेहरे' का प्रतिपाद्य है।

इसमें छिन्नमस्ता के समान लेखिका की आत्मकथा के कुछ अंश है। इस उपन्यास की प्रमुख पात्र रमा है। संपूर्ण उपन्यास में रमा के जीवन की नियति की क्रूरता को उभारा गया है।

1.2.2.7 पीली आंधी -

प्रभा जी के 'पीली आंधी' इस बहुचर्चित उपन्यास का प्रथम प्रकाशन सन् 1996 में हुआ था। यह न आत्मकथा है और न परकथा। इस उपन्यास में कोई एक परिवार नहीं, बल्कि पूरा कबीला है। संयुक्त परिवार है। मगर सबकुछ टूटता हुआ, उड़ती हुई रेत के ठूहें जैसे स्त्री -पुरूष और उनके किरकिराते हुए रेतीले क्षण। तीन पीढ़ियों की स्त्रियाँ-चाची, बड़ी माँ और सोमा अपनी-अपनी बात कहते हुए भी खामोशी की धुंध में खोती हुई। मगर एक चीज जो सबको जिंदा रखती है - वह है प्रेम। चाहे वह राजस्थान की सुनहरी रेत हो या बंगाल की हरियाली यह प्रेम ही तो है जो हम सबकी पहचान है। इसमें स्त्री के शोषण और उसके विद्रोह का अंकन हुआ है। यद्यपि

यह उसका मूल विषय नहीं हैं। वास्तव में 'पीली आंधी' प्रतीक है - सब कुछ उजड़ जाने का। इस पीली आंधी के बाद कैसे एक छोटा-सा अंकुर निकलता है और वह पल्लवित, पुष्पित होने लगता है - यही इस उपन्यास की मूल वस्तु है।

डॉ. पुष्पपाल सिंह लिखते हैं - "पीली आंधी" में राजस्थान अंचल का सूखा, अकाल, राजे-रजवाड़ों द्वारा शोषण, मारवाड़ी 'बनियों' की संस्कृति, जन-जीवन, उस समाज की रीति-नीति, तीज-त्यौहार, लोक-व्यवहार, अपनी जाति की पत रखने के लिए व्यापार और कारोबार को बढ़ाते रहने की जातीय जीवट, उनकी बोली-बानी, खान-पान, चौका-चूल्हा, वेशभूषा, विशेषतः आभूषण प्रेम आदि जितने प्रामाणिक, सूक्ष्म और जीवन्त रूप में गहरे रंगों में यहाँ उकेरे गये हैं वह हिंदी उपन्यास की महत् उपलब्धि हैं।"[45]

1.2.2.8 स्त्री-पक्ष -

प्रभा का यह उपन्यास सबरंग पत्रिका जनसत्ता में 14 फरवरी सन् 1999 से 1 अगस्त सन् 1999 तक प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने नारी जीवन की पीड़ा को उद्घाटित किया है। यह एक लघु उपन्यास है। जिसकी प्रमुख पात्र वृंदा है। इसमें नायिका वृंदा के माध्यम से नारी जीवन की त्रासदी और स्थिति का चित्रण किया गया है।

संक्षेप में प्रभा खेतान के उपन्यासों में भारतीय एवं पाश्चात्य नारियों के उपेक्षित, प्रताड़ित, शोषित जीवन को उभारा गया है। स्पष्ट है कि, 'आओ पेपे, घर चलें' में पाश्चात्य नारियों की संघर्ष गाथा है। 'छिन्नमस्ता' में नारी की व्यथा उसकी मन:स्थिति उसके आंतरिक एवं बाह्य संघर्ष का चित्रण है। 'अपने-अपने चेहरे' में विषम परिस्थितों के जाल में फँसी हुई नारियों का संघर्ष है। 'पीली आंधी' के विशाल फलक पर मारवाड़ी समाज की नारी की नियति एवं त्रासदी का चित्रण है। 'तालाबंदी' में प्रभा खेतान के व्यवसायिक अनुभव का यथार्थांकन है। 'एड्स' में वर्तमान वैश्विक समस्या 'एड्स' की ओर संकेत किया गया है। 'स्त्री-पक्ष' में वृंदा के जीवन की विषम परिस्थितियों का निरूपण करते हुए उसके मानसिक अन्तर्व्दंव्द का मनावैज्ञानिक पृष्ठभूमि में यथार्थ चित्रण हुआ है।

1.2.3 आत्मकथा -

प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' राजकमल प्रकाशन द्वारा नई दिल्ली से हंस पत्रिका में धारावाहिक रूप में प्रस्तुत हुई। तत्पश्चात सन् 2007 में पुस्तक के रूप में यह प्रकाशित हुई। इसमें उनके जीवन का बेहद बेबाक वर्जनाहीन चित्रण है। प्रारंभ में ही उन्होंने अपने और डॉ. सर्राफ के संबंध का चित्रण किया है। उनका प्यार प्रभा का सहारा, आश्रय एवं संबल था। इसमें उन्होंने अपनी माँ से मिली उपेक्षा, पिता की असमय मृत्यु से पहुँचा सदमा, बड़े भाई का उन पर किया हुआ यौन अत्याचार, दाई माँ का प्यार दुलार, भाई-बहनों का उनके साथ किया जानेवाला दुष्ट व्यवहार इसका चित्रण है।

इस आत्मकथा में अपने व्यवसाय की शुरूआत और उसमें मिली सफलता और समस्याओं को भी उद्घाटित किया है। उनकी मान्यता है कि उपन्यास से अधिक दिनों तक आत्मकथा जीवित रहती है। उनकी आत्मकथा का अंत अत्यंत भावुक एवं संवेदनशील है। जिसमें उन्होंने डॉ. सर्राफ की मृत्यु के प्रसंग को चित्रित किया है। प्रभा जी की आत्मकथा का मूल्यांकन करते हुए 'हंस' पत्रिका में अभय कुमार दुबे ने लिखा है - "प्रभा खेतान ने आत्मकथा लिखकर स्त्री जीवन की दुर्बलताओं के प्रामाणिक ब्यौरे पेश किए और उनके आईने में समाज को मजबूर किया कि वह स्त्री-पुरूष संबंधों पर एक बार फिर से सोचें।"[46]

नारी संघर्ष का प्रामाणिक दस्तावेज प्रकट करनेवाली प्रभा की आत्मकथा एक साहसिक गाथा है।

1.2.4 संपादन -

प्रभा खेतान द्वारा संपादित काव्य संग्रह 'एक और पहचान' सन् 1986 में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में प्रभा जी ने अरुण चोपड़ा, गोपाल कृष्ण सर्राफ, भँवरमल सिंधी, विष्णुकांत शास्त्री, शिवकुमार झुनझुनवाला, हृदयेश पांडेय आदि की कविताओं का संकलन हैं। साहित्यिक जगत में प्रस्थापित न होते हुए भी जिनकी संवेदना सराहनीय है, उन कवियों की कविताओं को उन्होंने इसमें प्रस्तुत किया है। 'एक और पहचान' में वे कहती है "जहाँ तक संपादन का सवाल है, मैंने भरकस

अपनी तटस्थता बनाये रखने की चेष्टा की है, मैंने मूल्यांकन की चेष्टा ही नहीं की क्योंकि प्रश्न उठता है कि कविताएँ इन्होंने क्यों लिखी? कुछ टुकड़ों का साहित्यिक महत्व न भी हो तो मानवीय महत्व बहुत बड़ा है। जिंदगी में कही कुछ घटता हैं, रोज-रोज के हादसे होते हैं और संघात के दौरान संवेदनशील मन कब और गहरे डूबता है तो व्यक्ति कविता लिखता है। हम इन कविताओं में पाते हैं एक बोध का परिचय और एक त्रासदी का नैरन्तर्य।"[47]

राजेंद्र यादव और अभय कुमार दुबे के साथ मिलकर प्रभा खेतान ने सन 2003 में स्त्री विमर्श पर लेखों के संग्रह 'पितृसत्ताक के नये रूप' का संपादन किया। इस संग्रह ने हिंदी वैचारिक जगत में काफी प्रशंसा प्राप्त की।

प्रभा खेतान ने मासिक पत्रिका 'हंस' के मार्च 2001 का अंक जो कि महिला विशेषांक था, का संपादन भी किया। इस अंक में मृणाल पांडे, अनामिका, नाओमी वुल्फ, रोहिणी अग्रवाल, क्षमा शर्मा, अलका आर्य, अशोक झा, विजय शर्मा, सुधीर पचौरी, निर्मला गर्ग, कात्यायनी, अर्चना वर्मा, उर्मिला पवार, जया जादवानी, पारमिता, शतपथी, गीतांजली, मैत्रेयी पुष्पा और वामा सहित अनेक रचनाकारों की रचनाओं का समावेश किया गया है। पत्रिकाओं में और महिला विशेषांकों में यह अंक अपनी विशेष पहचान रखता है।

1.2.5 अनुवाद -

प्रभा खेतान की लेखनी अनुवाद क्षेत्र में भी सफल रही। उन्होंने अपने मन और मस्तिष्क को प्रभावित करनेवाली काव्य कृतियों का अनुवाद किया।

1) साँकलों में कैद क्षितिज, 2) स्त्री उपेक्षिता।

1.2.5.1 साँकलो में कैद क्षितिज -

इस काव्य ग्रंथ में प्रभा जी ने 18 अफ्रीकी कवियों की कविताओं का अनुवाद किया है। इसमें अफ्रीकी जीवन की भयावहता, वर्णभेद, आर्थिक स्थिति, उनका शोषण चित्रित है। इसी के साथ उन कविताओं में कारावास के भयंकर जीवन, मंडेला की प्रशंसा, शहीदों का स्मरण वर्णित है।

1.2.5.2 स्त्री उपेक्षिता -

नारी विमर्श का प्रमुख 'द सेकंड सेक्स' का अनुवाद प्रभा जी ने 'स्त्री उपेक्षिता' नाम से किया है। प्रसिद्ध फ्रेंच लेखिका सिमोन द बोउवार की यह कृति नारीवाद के प्रश्न वास्तविकता के साथ चित्रित करती है। नारीवाद पर आधारित यह एक चिंतनपरक ग्रंथ है। इसके दो खंड है। प्रथम खंड में 'तथ्य और मिथ' एवं व्दितीय खंड में 'आज की स्त्री' की स्थिति को चित्रित किया गया है।

1.2.6 चिंतनपरक साहित्य -

प्रभा जी का चिंतनपरक साहित्य 1) सार्त्र का अस्तित्ववाद, 2) सार्त्र शब्दों का मसीहा, 3) आल्बेयर कामू: वह पहला आदमी, 4) उपनिवेश में स्त्री और 5) बाजार के बीच: बाजार के खिलाफ में उनके गहन चिंतन-मनन के दर्शन होते हैं।

1.2.6.1 सार्त्र का अस्तित्ववाद -

प्रस्तुत ग्रंथ का प्रकाशन सन् 1984 में हुआ। दर्शनशास्त्र की छात्रा होने के कारण उनका सार्त्र के प्रति प्रभावित होना स्वाभाविक था। इस ग्रंथ में प्रभा जी ने सुप्रसिद्ध दार्शनिकों जैसे देकार्ते, कामू किर्कगार्द, दोस्तो, यस्की, फ्रेडरिक नीत्शे, कार्ल जैपर्स, मार्टिन, हेडेगर इ. के दार्शनिक विचारों के साथ सार्त्र के चिंतन की तुलना की है। वास्तव में साहित्य और दर्शन के बीच संबंध स्थापित करने में सार्त्र का योगदान महत्वपूर्ण है। लेखिका ने सार्त्र के अस्तित्ववादी सिद्धांत 'संवेग का सिद्धांत', 'अस्तित्व अनस्तित्व: तर्क प्रणाली' को केंद्र में रखकर निरूपण किया है।

1.2.6.2.सार्त्र शब्दों का मसीहा-

इस ग्रंथ का प्रकाशन सन् 1985 में हुआ। इसमें नोबेल पुरस्कार पाने और उसके अस्वीकार कर देने वाले चिंतक सार्त्र के व्यक्तित्व और उनके चिंतन का रेखांकन किया गया है। उनकी मान्यता है कि - "सार्त्र केवल चिंतक ही नहीं थे दार्शनिक, राजनीतिक, सामाजिक अभिकर्ता, मानव मुक्ति के अग्रदूत और शब्दों के मसीहा इन सबके जीवन्त मिश्रण थे।"[48] लेखिका ने सार्त्र के उपन्यासों और नाटकों का विवेचन किया है। प्रभा जी ने कार्ल मार्क्स और सार्त्र के उपन्यासों और नाटकों का विवेचन किया है। प्रभा जी ने कार्ल मार्क्स और सार्त्र की चिंतनपरक दृष्टि के

साम्य और वैषम्य का निरूपण करते हुए लिखा है - " सार्त्र का प्रस्थान बिंदु चाहे मार्क्स से हो किंतु अंत में दोंनो की विचारधारा एक ही पड़ाव पर आकर रूकती है और वह है आदमी का आदमी से संबंध।"[49] निश्चित ही सार्त्र जैसे असामान्य व्यक्तित्व पर लेखनी चलाना प्रभाजी की प्रज्ञा एवं प्रतिभा का प्रमाण है।

1.2.6.3 आल्बेयर कामू: वह पहला आदमी -

इस ग्रंथ का प्रकाशन सन् 1993 में हुआ। इसमें प्रख्यात मानवतावादी चिंतक आल्बेयर कामू के जीवन और उनके चिंतन की अभिव्यक्ति है। कामू आम आदमी की पीड़ा के प्रति संवेदनशील है। लेखिका ने पंद्रह अध्यायों में कामू के 'घर में किताब का सवाल', 'बीमार मेधावी', 'अशांत वैवाहिक संबंध', 'यथार्थ से संवाद की स्थापना', 'जुझारू तेवर और राजनीति', 'संघर्षो से गुजरते हुए', 'मानवीय चेतना का चितेरा' आदि शीर्षकों के अंतर्गत कामू के संघर्षशील व्यक्तित्व को चित्रित किया है। इसमें प्रभा लिखती है-"जिसने आदमी का दर्द समझा, जो आदमी की संवेदना की गहराइयों में डूबा था, जिसे स्नेह प्यार की तपिश और गर्माहट पसंद थी। लेकिन वह मारा गया घृणा के बर्फीले तूफानों में घिरकर। चूँकि वह समय से पहले बोल रहा था।"[50]

1.2.6.4 उपनिवेश में स्त्री -

'उपनिवेश' में स्त्री यह सन् 2003 में प्रकाशित प्रभा जी का विचारात्मक लेखों का संग्रह हैं। इसमें मुक्ति कामना के दस निबंध जिसे वार्ता कहा गया है संकलित है। दस शीर्षकों के माध्यम से लेखिका ने नारी को केंद्र में रखकर उसके अस्तित्व और अस्मिता की खोज की है।

'आधी दुनिया का श्रम और भूमंडलीकरण' में उन्होंने विश्व यात्रा से प्राप्त अनुभव से नारी के उपेक्षित जीवन को चित्रित किया है। 'स्त्री लेखन की जगह और आलोचना के भीष्म पितामह' में साहित्य जगत में स्त्री की उपेक्षा के प्रति व्यथा व्यक्त हुई है। 'बौद्धिक सरोकार, राष्ट्रवाद और नारीवाद की जमीन' में राष्ट्रीय स्तर पर नारी को कोई स्थान प्राप्त नहीं हो पाया है इस पीड़ा को व्यक्त किया है। 'संस्कृतिवाद के छल-कपट और स्त्री का मानस' में शुद्र नारियों पर हो रहे अन्याय और अत्याचार के प्रति उन्होनें दु:ख प्रकट किया है। 'नारीवादी ज्ञान मीमांसा के

उद्देश्य' निबंध में लेखिकाओं को आलोचकों के द्वारा हाशिए पर रखने की निंदा की है। 'स्त्री का सारतत्व' में उन्होंने यह तर्क दिया है कि पुरूष सत्ताक पद्धति के कारण नारी के जीवन के लिए एक निश्चित नियमावली प्रस्तुत की गई है। 'यौनिकता की राजनीति' में यौनिकता को दृष्टि में रखकर स्त्री के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है। 'सामाजिक सरोकार उर्फ आक्रमकता की खोज में' यह मान्यता प्रस्थापित करने का प्रयास किया गया है कि यद्यपि स्त्री का सर्जक रूप अनन्य है, तथापि वह आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक स्तर पर गौण ही रही है। 'क्रांति चेतना के नारी रूप' इस निबंध में मार्क्सवादी दृष्टि से नारी विमर्श प्रस्तुत हुआ है। 'भाषा और विमर्श का संजाल' निबंध के अंतर्गत मार्क्सवादी न होते हुए भी शोषितों को जागृत करनेवाले नेल्सन मंडेला के कार्य को सराहा गया है।

1.2.6.5 बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ -

प्रभा जी की इस कृति में भूमंडलीकरण और स्त्री के प्रश्न पर चिंतन है। इसका प्रकाशन सन् 2004 में हुआ। इसके छह खंडों में छह विषयों पर सूक्ष्मांकन किया गया है जैसे- 'एक प्रश्नवाची समय', 'घुमड़ते हुए बादल', 'भोग और भोगा जाना', 'श्रम के स्त्रीकरण की हकीकत', 'यौन कर्म की कीमत', 'बहुलतावादी रणनीति चाहिए' आदि। 'एक प्रश्नवाची समय' के अंतर्गत उन्होंने भूमंडलीकरण के कारण हुई स्त्री की स्थिति पर विचार-विमर्श किया है। उन्होंने इस ग्रंथ में लिखा हैं "यदि परंपरा से स्त्री पर पुरूष हावी है तो अंत में भूमंडलीकृत समाज में श्रम का चाहे जितना स्त्रीकरण हो सार्वजनिक स्थानों में चाहे जितनी अधिक स्त्रियाँ दिखाई पड़े, पर गैर सरकारी संस्थाओं में स्त्रियों की चाहे जितनी भागीदारी हो, अंततः सोपानीकृत समाज व्यवस्था में वे पुरूष से कमतर ही रहेंगी।"[51]

इस प्रकार उपर्युक्त सभी चिंतनपरक ग्रंथ प्रभा जी के गहन एवं विस्तृत अध्ययन, चिंतन, मनन की साक्ष्य देते है।

1.2.7 पत्र पत्रिकाएँ-

प्रभा जी ने बहुत-सी पत्र-पत्रिकाओं में लेखन कार्य किया है। उन्होंने 'हंस' के स्त्री विशेषांक में तथा 'आज' पूजा वार्षिकांक में 'एड्स' नामक लघु उपन्यास का

लेखन किया है। उनके साहित्य में स्त्री यंत्रणा को आसानी से देखा जा सकता है। बंगाली स्त्रियों के बहाने उन्होंने स्त्री जीवन में काफी बारीकी से झाँकने का सुंदर प्रयास किया है। इनको जहाँ स्त्रीवादी चिंतक होने का गौरव प्राप्त हुआ वहीं वे स्त्री चेतना के कार्यों में सक्रिय रूप से हिस्सा भी लेती रही हैं।

1.2.8 प्रकाशनाधीन साहित्य-

प्रभा खेतान काफी सक्रियता से लेखन के क्षेत्र में जब गतिशील थी, तब अचानक उनका निधन हो गया। अनेक रचनाओं पर उनका लेखन चल रहा था। मन के कोने एवं डायरियों के पन्नों में अनेक रचनाओं के मूल थे। कुछ रचनाएँ तो पूर्णता की ओर थी, जिसमें आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' का दूसरा भाग काफी उल्लेखनीय माना जा सकता है।

प्रभा खेतान के प्रकाशनाधीन साहित्य को प्रकाश में लाने के लिए प्रभा जी के निजी सहायक रहे मोहनकुमार और दत्तक पुत्र संदीप भुतोड़िया का योगदान अब काफी महत्वपूर्ण हो जाता है।

1.3. सम्मान एवं पुरस्कार -

"मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी लालसा यही है कि वह कहानी बन जाए और उसकी कीर्ति हर एक जबान पर हो।"[52] प्रभा जी का जीवन भी ऐसा ही था। वह 'प्रभा खेतान फाउन्डेशन' की संस्थापक अध्यक्षा, रेड क्रास के कल्याण शाखा की भूतपूर्व चेअरपर्सन, भूतपूर्व निर्वाचन आयुक्त श्री.टी.एन.शेषन के साथ देशभक्त ट्रस्ट में न्यासी, जिला सैनिक बोर्ड कलकत्ता की मानद सदस्या नारी विषयक कार्यो में सक्रिय रूप से भागीदार, 'फिगरेट' नामक महिला स्वास्थ केंद्र की संस्थापक, सन् 1966 से सन् 1976 तक चमड़े तथा सिले-सिलाए वस्त्रों की निर्यातक, अपनी कंपनी 'न्यू होराईजन लिमिटेड' की प्रबंध निर्देशिका, हिंदी भाषा की लब्ध प्रतिष्ठित उपन्यासकार, कवयित्री नारीवादी चिंतक तथा समाजसेविका थी। वह केंद्रीय हिंदी संस्थान की सदस्या भी थी।

अपनी व्यवसायिक सफलता के कारण वे निम्नलिखित पुरस्कारों से पुरस्कृत हुई-

1. इंडिया इंटरनॅशनल सोसायटी फॉर यूनिटी द्वारा 'रत्न शिरोमणि' पुरस्कार से पुरस्कृत।
2. इंडियन सॉलिडियरिटी काउंसिल द्वारा 'इंदिरा गांधी सॉलिडियारिटी' सम्मान प्रदान।
3. 'टॉप पर्सनाल्टी' एवार्ड से (उद्योग) लायंस क्लब द्वारा सम्मानित।
4. 'उद्योग विशारद'-उद्योग टेक्नोलॉजी फाउंडेशन द्वारा सम्मानित।
5. भारत निर्माण संस्था द्वारा 'प्रतिभाशाली महिला पुरस्कार' से गौरवन्वित।
6. 'के. के. बिडला फाउंडेशन से प्राप्त बिहारी पुरस्कार।'
7. 'केंद्रीय हिंदी संस्थान की ओर से राष्ट्रपति के कर कमलों द्वारा महापंडीत राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार से सन्मानित।'
8. 'कोलकत्ता के 138 वर्ष पुराने चेंबर ऑफ कॉमर्स की वे प्रथम महिला अध्यक्ष के रूप में चयनित हुई।'

इस प्रकार प्रभा जी के व्यक्तित्व में उनकी साहित्यिक प्रतिभा एवं व्यवसायिक बुद्धि का अद्भुत समन्वय दृष्टिगत होता है।

1.4 मृत्यु -

डॉ. प्रभा खेतान का दु:खद निधन 19 सितंबर 2008 को बाइपास सर्जरी के बाद हो गया। उनके निधन पर अनेक साहित्यिक मनीषियों ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की है। जितेंद्र धीर 'अक्षर पर्व' पत्रिका में लिखते हैं - "पार्थिव रूप से वह आज नहीं रही लेकिन अपने स्पष्ट निर्भीक लेखन (बोल्ड राइटिंग) और कलम के जरिए स्त्री स्वाधीनता की लड़ाई लड़ने वाली जुझारू लेखिका के रूप में हमारे बीच सदा मौजूद रहेंगी।"[53] निश्चित ही प्रभा खेतान का असामायिक निधन हिंदी साहित्य के लिए एक क्षति ही है।

सरस्वती और लक्ष्मी दोनों का वरदान प्राप्त प्रतिभाशाली महिला डॉ. प्रभा खेतान अपने लेखन के कारण हमें हमेशा याद रहेगी। कोलकत्ता के साहित्यकारों व समाजसेवियों ने उनकी मृत्यु पर शोक सभा का आयोजन कर इस सशक्त लेखिका के प्रति श्रद्धांजली अर्पित की।

भारतीय भाषा परिवार के मंत्री नंदलाल शाह ने श्रद्धांजली अर्पित करते हुए कहा - "भले ही प्रभा जी हम सबको छोड़कर दूसरी दूनिया में चली गयी। पाठकों के बीच अपनी रचनाओं के लिए बराबर याद की जायेंगी।"[54]

महिला लेखिका कला जोशी ने शोक संदेश में कहा - "वह मसीहा आज हमारे बीच नहीं है, किन्तु इतना अवश्य सत्य है जब-जब स्त्री के आँसू लेखनी में ढलेंगे, स्त्री विमर्श की बात होगी 'प्रभा खेतान' का वहाँ जरूर जिक्र होगा।"[55]

समकालीन रचनाकारों के बीच सोच और सृजन के साथ गहरी संलग्नता रखनेवाली, कम उम्र में ही अपनी प्रतिभा बिखेरकर दुनिया को अलविदा कहनेवाली प्रभा जी की स्मृतियाँ सदैव प्रेरणा देती रहेगी, क्योंकि अच्छा लेखक कभी मरता नहीं वह अपनी पुस्तकों में हमेशा जीवित रहता है।

निष्कर्ष :-

प्रभा खेतान का बचपन उपेक्षित एवं प्रताड़ित था। माता के प्यार से वंचित बच्ची का आश्रय और सहारा दाई माँ बनी। बचपन में ही उनके पिता की मृत्यु हो गई। पिता की मृत्यु के पश्चात वह अपने आपको असुरक्षित महसूस करती है। संपन्न मारवाडी समाज में उनका जन्म हुआ। उन्हें अपना समाज पसंद नहीं था। इस वजह से वह खुद को अलग बनाने का प्रयास करती। उन्होंने स्वयं कहा है- "मैं भरकस चेष्टा करती कि मैं मारवाड़ी नहीं बंगाली दिखूँ। अपनी मारवाड़ी पहचान को मैं रगड़-रगड़कर मिटाने लगी थी। पर पेंसिल से खींची गई लकीरों, अक्षरों एवं तस्वीरों को ठीक से मिटाना संभव नहीं था। उन दिनों तो.... पर मुझे अपने आपको मारवाड़ी कहने में शरम आती थी।"[56] उनका व्यक्तित्व विद्रोही रहा है। पंरपराओं को चुनौती देते हुए उन्होंने अपना चमड़े का व्यवसाय शुरू किया और उसमें सफलता प्राप्त की। आजीवन अविवाहित रहकर डॉ. सर्राफ से आत्मीय संबंध स्थापित कर उनके परिवार को भी उन्होंने सहारा दिया।

अपने साहित्यिक सृजन की यात्रा उन्होंने काव्य से शुरू की। अपने भावों और विचारों को अधिक सक्षमता से व्यक्त करने के लिए उपन्यास लिखें। उन्होंने 'आओ पेपे, घर चलें' इस उपन्यास में पाश्चात्य परिवेश में स्त्री के हो रहे शोषण को चित्रित

किया है। 'अग्निसंभवा', और 'एड्स' के माध्यम से विदेशी जीवन की मानसिकता को चित्रित किया गया है। 'तालाबंदी' में अपने व्यवसायिक अनुभव, समस्याएँ एवं संघर्ष को उद्घाटित किया है। 'छिन्नमस्ता' में अपने ही जीवन के अनेक प्रसंग को वाणी दी । 'पीली आंधी' में राजस्थान से व्यवसाय हेतु कलकत्ता में स्थलांतरित मारवाड़ी समाज के जीवन संघर्ष का वर्णन किया गया है। 'अपने-अपने चेहरे' की रमा अविवाहित रहकर मि. गोयनका के प्रति समर्पित होने में स्वयं प्रभा जी का जीवन दृष्टिगत होता है। 'स्त्री-पक्ष' उपन्यास की वृंदा तो नारी की स्थिति, गति, उसकी नियति की त्रासदी है।

प्रभा जी का अध्ययन, मनन, चिंतन अत्यंत गहन है। उन्होंने उपन्यास के साथ-साथ चिंतन परक साहित्य का सृजन किया है। 'सार्त्र का अस्तित्ववाद' ग्रंथ उनके चिंतन की साक्ष्य देता है। प्रभा जी का चिंतन समसामायिक विषयों को सिद्ध करता है। वे वर्तमान, यथार्थ और भविष्य की संभावनाओं को वैचारिक दृष्टि से देखती है। 'बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ' वर्तमान वैश्वीकरण की अनेक समस्याओं से हमें परिचित कराता है। उनके द्वारा फ्रेंच लेखिका सीमोन-द-बोउवार के ग्रंथ 'द सेकंड सेक्स' का 'स्त्री उपेक्षिता' नामक अनुवाद स्त्री विमर्श का अग्रणी ग्रंथ कहा जाता है।

अपने अनुभव को प्रामाणिकता से चित्रित करनेवाली 'अन्या से अनन्या' यह उनकी आत्मकथा है। बहुआयामी जीवन की धनी प्रभा जी का कृतित्व उनकी असाधारण सृजन-शक्ति का परिचायक है। उनका जीवन संघर्षशील एवं गतिशील था। वे निर्भीड, स्वावलंबी, महत्वाकांक्षी, संवेदनशील, खुशमिजाज, भावुक, विद्रोही, दृढसंकल्पी, देशप्रेमी, स्वाभिमानी, सहनशील एवं स्पष्ट वक्ता थी। मारवाड़ी समाज में जन्म लेने के बावजूद उन्होंने देश-विदेश की यात्राएँ की थी। अनेक व्यवसायिक एवं समाजसेवी संस्थाओं से वे जुड़ी रही। प्रभा जी की भगवान पर अटूट श्रद्धा थी। वह हनुमान जी की परम भक्त थी। वह बड़े ही श्रद्धा एवं भक्ति के साथ हनुमान चालीसा का पाठ करती थी।

बाह्य दृष्टि से प्रभा जी का जीवन संघर्षपूर्ण रहा है। उनका दृष्टिकोण सदा आस्थावादी रहा। उनके व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण पक्ष यही है कि वे कभी भी मुसीबतों,

संघर्षों एवं अभावों में पराजित नहीं हुई न तो पलायनवादी बनी। वे आशावादी बनकर हमेशा परिस्थितियों से लड़कर मार्ग बनाती रही। प्रतिभावान प्रभा खेतान अपने परिश्रम के बल से आगे बढ़ी । बाह्य दृष्टि से कठोर एवं गंभीर प्रतीत होनेवाली वे अंत: करण से अत्यंत कोमल थी। साहित्यिक क्षेत्र में अनेक बार उनकी प्रशंसा एवं कटु आलोचना होती थी। परंतु न वे क्रोधित होती थी और न असंतोष प्रकट करती थी। दोषारोपण या आलोचना करनेवालों के साथ वे आत्मविश्वास से बात करती थी। वे आत्मप्रशंसा की इच्छुक नहीं थी। उन्हें फिजूलखर्ची पसंद नहीं थी।

घुमक्कड़ स्वभाव की प्रभा जी अपनी प्रतिभा एवं परिश्रम से संसार में श्रेष्ठ साहित्यकार एवं श्रेष्ठ उद्योजिका का दर्जा हासिल कर पायी थी। प्रभा जी की जीवन रेखा से स्पष्ट होता है कि संघर्ष ही उनका आदि से अंत तक साथी रहा। जितना संघर्ष प्रभा ने अपने जीवन में किया, वह एक स्त्री में शक्ति का संचार करने के लिए औषधि का काम करता है। असहाय बचपन से शुरू हुआ उनका जीवन सशक्त व्यक्ति के रूप में उभरता है। प्रभा खेतान के साहित्य में नारी प्रमुखता में उभरी है। उत्तर आधुनिक युग में नारी विमर्श के बीच प्रभा खेतान के समग्र साहित्य का अध्ययन समीचीन है।

संदर्भ सूची -

1. ''अन्या से अनन्या' प्रभा खेतान - पृ. 91
2. वही पृ. 169
3. वही पृ. 168
4. वही पृ. 33
5. वही पृ. 37
6. वही पृ. 39
7. वही पृ. 31
8. वही पृ. 17
9. वही पृ. 88
10. वही पृ. 16
11. वही पृ. 25
12. वही पृ. 26
13. वही पृ. 82
14. वही पृ. 08
15. वही पृ. 14
16. 'यशपाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व' त्रिवेदी भूलिका : पृ. 58
17. 'अन्या से अनन्या' प्रभा खेतान - पृ. 33
18. वही पृ. 62
19. वही पृ. 63, 64
20. 'प्रेमचंद जीवन कला और कृतित्व', रहबर हंसराज पृ. 49
21. 'अन्या से अनन्या' प्रभा खेतान - पृ. 175
22. 'अन्या से अनन्या' प्रभा खेतान - पृ. 199
23. अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, पृ-52
24. वही पृ. 57
25. वही पृ-176

26. वही पृ. 29
27. वही पृ-223-224
28. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, कृष्णा जाखड़ - पृ. 26
29. अपरिचित उजाले, प्रभा खेतान पृ. 10
30. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ. कामिनी तिवारी पृ. 20
31. सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं, प्रभा खेतान, पृ.59
32. एक और आकाश की खोज में, प्रभा खेतान, पृ. 8
33. कृष्ण धर्मा मैं, प्रभा खेतान, पृ. 16
34. हुस्नाबानों और अन्य कविताएँ, प्रभा खेतान, पृ. 16
35. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ. कामिनी तिवारी पृ. 24
36. अहल्या, प्रभा खेतान, पृ. 29
37. वही पृ. 27
38. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ. कामिनी तिवारी पृ. 25
39. वही पृ. 18
40. वही पृ. 25
41. वही पृ. 18
42. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ. कामिनी तिवारी पृ. 27
43. वही पृ. 28
44. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान मलपृष्ठ
45. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ. कामिनी तिवारी पृ. 30
46. वहीं पृ. 36
47. वही पृ. 37
48. वही पृ. 31
49. वही पृ. 32
50. वही पृ. 32
51. बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ, प्रभा खेतान पृ. 242

52. 'प्रेमचंद जीवन कला और कृतित्व', रहबर हंसराज पृ. 181
53. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ.कामिनी तिवारी, पृ. 18
54. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी डॉ. अशोक मराठे, पृ. 36
55. वही पृ. 36
56. अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, पृ.44